वर्ष 6, अंक 9, इलाहाबाद मई 2007

विश्व स्नेह समाज

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

कीमत 5 रुपये

खुशहाल दाम्पत्य के लिए जरुरी है आपसी सामजस्य

फर्जी डॉक्टर

चार कहानिया

पर्यावरण की रक्षा के लिए युवकों को आगे आना चाहिए

अंग्रेजी से नहीं, अंग्रेजियत से विरोध है

अध्यापिका से मुख्यमंत्री की कुर्सी तक चौथी बार पहुंची सुश्री मायावती का सफरनामा

सुश्री मायावती में है दम, तभी भरती है दम्भ

रचनाएं आमंत्रित है

काव्य संग्रह हेतु :

कवियों से दो रचनाएं, सचित्र जीवन परिचय तथा १००/-रुपये, **अथवा** दस रचनाएं, सचित्र जीवन परिचय तथा ५००/-रुपये

लेख संग्रह हेतु :

दो लेख, सचित्र जीवन परिचय सहित अधिकतम १००० शब्द-२००/-रुपये/, १०००-२००० शब्द ५००/- **अथवा** दस लेख, प्रत्येक १०००शब्द-१०००रु० प्रत्येक १०००-२००० शब्द-२०००/रुपये

लघु कथा संग्रह हेतु :

दो लघु कथांए, सहयोग राशि २००/-रुपये **अथवा** दस लघु कथांए, सहयोग राशि २०००/-रुपये

कहानी संग्रह हेतु :

एक कहानी, सचित्र जीवन परिचय तथा सहयोग राशि २५०/-रुपये, **अथवा** चार कहानी, सहयोग राशि ५००/-रुपये

प्रेषण की अंतिम तिथिः

काव्य संग्रह हेतूः ३० जून २००८

निबंध संग्रह/ कहॉनी संग्रह/लघु कथा संग्रह : ३० जुलाई २००८

के साथ आमंत्रित है. अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए जवाबी टिकट लगे लिफाफे के साथ लिखें/भेजें-आप अपनी सहयोग राशि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी शाखा में खाता सं०ःएस.बी. 538702010009259 में सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के नाम से भी जमा कर सकते है अथवा धनादेश/डी.डी./चेक सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के नाम से दे सकते है. ५००रुपये से कम का चेक संग्रह चार्ज के साथ ही स्वीकार्य होगा.

लिखें या सम्पर्क करें:प्रसार सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी–93,नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
कानाफुसीः 9335155949 ईमेलः sahityaseva@rediffmail.com

प्रकाशन हेतु सम्पर्क करें

अपने काव्य संग्रह, कहॉनी संग्रह, आलेख संग्रह आदि प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षणः

१.मात्र लागत मूल्य पर
२.विक्री की व्यवस्था
३.प्रचार प्रसार की व्यवस्था
४.विमोचन की व्यवस्था

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखेंः

प्रसार सचिव
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–211011
ईमेलः sahityaseva@rediffmail.com

विश्व स्नेह समाज

प्रधान सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

वर्षः७ अंकः६ जुन०८,इलाहाबाद

पुलिस विभाग का काम बदल गया है

यह बात अब खुल कर सामने आने लगी है कि पुलिस विभाग का काम अब बदल गया है. उसके पास नागरिक सुरक्षा व सरंक्षा से पैसा वसूली, गाड़ी चेकिग, सत्ता पक्ष के नेताओं की जी हजुरी करना हो गया है. शहरों में आये दिन प्रत्येक चौराहे पर थानेदारों की गाड़ी खड़ी मिलेगी. पॉच–छः सिपाही, दो–चार होमगार्ड चौराहे के चारों तरफ गाड़ी चेक करने पर लगे मिलेंगें. कागज दिखाओं, कागज है, हेलमेट कहॉ है, हेलमेट है तो प्रदूषण का कागज कहॉ है. अगर नहीं है तो कुछ दीजिए और जाइए. एक चौराहे को पार कीजिए तो अगले चौराहे पर दूसरे सिपाही, या थानेदार, ट्रैफिक पुलिस के सिपाही हाथ देकर गाड़ी रुकवाते दिख जाएंगें. अगर आप जरुरी काम से कहीं जा रहे है, जल्दी में है तो आपकी एक घंटे की यात्रा चार घंटे में सम्पन्न होगी. अगर आप सीधे साधे इंसान है तो आपकी तो हालत खराब. सारे कागज है, हेलमेट है तो आपसे गलत तरीके से गाड़ी चलाने के नाम पर वसूला जाएगा. शहरों में गॉवों में अपराध, बलात्कार, छिनैती, हत्या की घटनाए दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है. खासकर महिलाओं/लड़कियों का निकलना दुभर होता जा रहा है. ऐसे में केवल गाड़ीयों के चेक करने से अपराध नहीं थमेंगें. दूसरा काम हो गया है ट्रको को रोककर वूसली करने का, सड़क पर चाहे जितना जाम लग जाए, उन्हें वसूली करनी है. नो इंट्री जोन में, समय में गाड़ी लेकर जाना है नोट पकड़ाइये और जाइए. तीसरा काम सुबह–शाम सत्ता पक्ष के नेताओं के यहॉ हाजिरी लगाना और नेताओं से अच्छी कमाई वाली जगह पर स्थानान्तरण या ड्यूटी लगवाना हो गया है. ऐसे में आप खुद सोचों पाठकों की अपराध कहां से थमेंगें. क्यों न बढ़े अपराधों ग्राम दिन प्रतिदिन.............?

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

संरक्षक सदस्यः
डॉ0 तारा सिंह, मुंबई

सम्पादकीय कार्यालयः

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
कानाफुसीः 09335155949
ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

आवश्यक सूचनाः
1.पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।
स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

अंदर पढ़िए

प्रेरक प्रसंग–4
वन विभाग व जे0पी0समूह की मिलीभगत से बड़े पैमाने पर सरकारी सम्पत्ति का नुकसान–5
कैसा होगा आपका नया वर्ष–8
विवादों की संस्कृति में खण्डित होता अपनत्व–12
फैजाबाद के प्रथम स्वतंत्रता सेनानीः मौलवी सिकन्दर शाह–14
कोई जब तुम्हारा हृदय तोड़ दे–21
व्यक्तित्व–19,स्नेह बाल मंच–24
अध्यात्म– 20
कविताएं–7,16,17,22,24,25,30
जरा हंस दो मेरे भाय–23
साहित्य समाचार–26, 28
स्वास्थ्य–27, कहानी–15,22
चिट्ठी आई है–29, लघु कथा–31
ज्योतिष–29, चिट्ठी आई है–30
समीक्षा– 32,33

जीवन दर्पणं

आमतौर पर कहा जाता है कि दर्पण कभी झूठ नहीं बोलता, पदार्थ व द्रव्य को यथावत दर्शाने वाला दर्पण कहलाता है, वैसे ही जीवन सच्चाईयां एवं मायावी संसार का कटु सत्य व प्रतिपल परिवर्तनप को धारण करते रहने वाले जड़ व चेतन के यर्थाथ स्वरुप को समझाने वाले ज्ञानरुपी दर्पण को जीवन दर्पण कहा जा सकता है. इसलिए कहा गया है-

समझ सार है संसार मो, समझु टाले दोष।
समझ-समझ कर ही, जीव गया अनंता मोक्ष।।

वैसे तो जीवन जीने के लिये, हर कोई जिया करते है।
पर धन्य है उनका जीवन, जो समझ कर जीया करते है।।

सच्ची समझ सही रास्ता दिखायेगी, जहां न धोखा है व न खतरा-बल्कि उत्थान की ओर आगे बढ़ने का ब्योरा, अतः वास्तविकता को स्वीकार करना ही सच्ची समझ है. सच्ची समझ का दूसरा नाम विवेक है जो सही और गलत का निर्णय कर सकता है. संसार की सभी वस्तुए यदि अनुभव की तराजू में तोली जाएं तो अन्ततः सभी निरर्थक निस्सार सिद्ध होगी, यही संसार का कटु सत्य है जिसकी महापुरुषों ने परमार्थ की दृष्टि से उदघोषणा की व आत्म अनुसंधान का मार्ग प्रस्तुत किया जिसका हमें अनुकरण करना चाहिए. आत्मज्ञान व आत्मानुभूति से ही सच्चे आनंद की प्राप्ति व प्रतीति हो सकती है. आत्मा मात्र अनुभवगम्य है.

अनुभव चिंतामणि रत्न, अनुभव है रसकूप।
अनुभव मार्ग मोक्ष को, अनुभव मोक्ष स्वरुप।।

सम्यक दर्शन व सम्यक ज्ञान से आत्मानुभूति संभव है, सर्वज्ञ की दृष्टि से तो आत्मज्ञान ही ज्ञान है, शेष सभी अज्ञान, विश्व शांति का मूल मंत्र है वीतराग विज्ञान वीतराग प्ररूपित निजधर्म आत्म कल्याण का संदेश देता है. जहॉ कहा जाता है कि-

यह दुर्लभ मानव भव पायी जो विषयकषाय में रचे पचे छे।
वे नर समझे नहीं राख ने माटे रतन ने बाले छे।।

अर्थात इस दुर्लभ मनुष्य भव में ही सम्यकृत्व व आत्मबोध प्राप्त करने में तत्परता दिखाने की आवश्यकता है अन्यथा जीवन की कोई सार्थकता नहीं. जीवन का लक्ष्य यदि पवित्र है तो आत्मशक्ति सदा साथ है जिसे विकसित करने की आवश्यकता है, तभी जीवन का सही मूल्यांकन हो सकेगा. महापुरुषों का कहना है कि इन्सान यदि अपनी अन्दरुनी कीमत घटाता जाये तो वह मात्र मुट्ठी भर मिट्टी के सिवाय कुछ नहीं है परन्तु वह अपने को अगर अन्तर से विकसित करे तो सारे ब्रहाण्ड में भी नहीं सकता.

केवलचन्द जैन, बेंगलोर (जीवन दर्पण से)

++++++++++++++++++++++++++++

स्तम्भः क्या करें, क्या न करें

सड़को पर अवरोधः सड़को पर रूकावट एक आम बात हो गई है. बस, बहाना चाहिए. षादी हो या कोई उत्सव तम्बू, तुरन्त गड़ जाते है. इससे आने-जाने में बड़ी दिक्कतें आती है. सबसे बड़ी परेषानी आती है जब किसी घर में गर्भावस्था की हालत में दर्द षुरु हो जाए, या कोई रोगी गम्भीर रुप से बीमार हो जाए. अस्पताल ले जाना मुष्किल हो जाता है. यदि गाड़ी में किसी ऐसे रोगी या महिला की मृत्यु हो जाए तो किसका दोश है? हम सबको चाहिए कि अपनी इस आदत को सुधारें और सड़को पर अवरोध न dj**s**

डॉ. नरेन्द्र नाथ लाहा, ग्वालियर, म.प्र.

आदाब अर्ज

कावा-काशी द्वारका, मक्का डारे छान।
निर्धन के घर में छिपे, बैठे थे भगवान।।

मन्दिर-मस्जिद में नहीं, पाएगा भगवान।
अगर ढूंढना चाहता, बच्चों में पहचान।।

चाहत हो सुख-चैन की, तो बांटो सुख-चैन।
मीठा बोले से मिलें, मीठे-मीठे वैन।।

चुरा चुरा कर धन धरा, किन्तु बुझी न चाह।
हाथ मला वा सिर धुना, पल्ले आई चाह।।

संतोषी की जेब में, बैठा है सुख चैन।
हिरदे के 'आनन्द' को कह देते है नैन।।

प्रेम करे से मिलत हैं, प्रेम और सद्भाव।
'मोहन' भूल न पालिए, मन में कभी दुराव।।

पं. मोहन आनन्द तिवारी, भोपाल

खुलासा

वन विभाग व जे०पी०समूह की मिलीभगत से बड़े पैमाने पर सरकारी सम्पत्ति का नुकसान

डॉ0 ए.के. गुप्ता, सोनभद्र

4200 बीघा वनभूमि किसके इशारे पर जे पी एसोसिएट को देने की साजिश रची जा रही है।

जे०पी०सीमेन्ट कंपनी व एफ०एस०ओ० सोनभद्र की मिलीभगत से वन विभाग को करोड़ों का नुकसान हो रहा है. जे०पी०कंपनी को कारपोरेशन की भूमिधारी जमीन ४१७.५३१ एकड़, डाला-कोटा में व लीज जमीन डाला माइन्स कजरहट में ७५१ हेक्टअर टेण्डर के दौरान मिला.

इसके बावजूद जे०पी०कंपनी लिमिटेड कैम्प, डाला सोनभद्र प्रकीर्ण वाद सं० १८०/३५३ व १८१/३५४ के अन्तर्गत धारा ७/११ भारतीय वन अधिनियम प्रार्थना पत्र दिनांक १६.०१.२००७ के आधार पर पंजीकृत किया गया. आ०न०१११ रकवा ४.७१०, ३१८५क रकबा २२.४४५ व ३१८७ मि० रकवा ०.६६६ हेक्टेयर, ६३३क रकबा १२.४६० हैक्टर,३१८६ रकबा ०.७०० हेक्टैयर, ३१६५ख रकबा २.४३३ हेक्टैयर, ३१६६क रकबा ७.५६१ हेक्टैयर, ३१६८ रकबा २१.१००, ३१६६ रकबा २१.२५०, ३२०० रकवा ३५.७६०, ३२०१ग मि०रकवा ७.१७६, ३२०२ रकबा १४.३५०, ३२०३ रकबा १६.२६६, ३२०४ रकबा १०१५०,३२०५क रकवा ११.००, ३२०६ रकबा ११.००, ३२११ रकबा १४.८५०, ३२१२ रकबा २४.०० हेक्टर स्थित ग्राम-कोटा, उक्त भूमि पर जे०पी०कंपनी द्वारा वर्तमान समय में अपना कब्जा दखल होना बताया है.

जे०पी०कंपनी द्वारा उक्त भूमि सुरक्षित वन के खाते से पृथक कर अपना नाम बहैसियत असल कास्तकार दर्ज करने का निवेदन किया. जे०पी०कंपनी का प्रार्थना पत्र दिनांक ०५.०२/०७ निरस्त कर दिया गया.

उक्त आदेश के विरुद्ध जे०पी०कंपनी मानीय जनपद न्यायाधीश सोनभद्र के न्यायालय में अपील संख्या-२ सन २००७ दाखिल किया.

उक्त अपील में वन विभाग के अधिवक्ता श्री नंद लाल गप्ता द्वारा प्रस्तुत जे०पी०कंपनी के खिलाफ प्रस्तुत आपत्ति में तमाम अनिमियताओं को दर्शाया इसके बावजूद जिला जज सोनभद्र ने अपने अधिकारों का दुरुपयोग करते हुए कंपनी को लाभ पहुँचाने की नियत से कंपनी के पक्ष में दिनांक २६.५.२००७ अपील स्वीकार करते हुए पत्रावली इस निर्देश के साथ एफ० एस० ओ० के न्यायालय में रिमांड कर दी गयी कि नये सिरे से वाद कायम कर उभय पक्षो को सुनवाई का अवसर प्रदान करते हुए वाद का निस्तारण किया जाय. वन विभाग के अधिवक्ता ने विस्तृत आपत्ति प्रस्तुत करते हुए निवेदन किया कि परगना अमोरी में जमीनदारी १ जुलाई सन् १६५३ को टूटी उस समय काश्त एवं आवादी की भूमि छोड़कर शेष समस्त भूमि राज्य सरकार में निहित हो गयी. इसलिए राज्य सरकार ने उक्त प्रकार की समस्त भूमि को प्रबन्ध के लिए वन विभाग को इस शर्त के साथ हस्तान्तरित कर दिया कि जब तक परगना अगोरी में धारा ११७-१ की विज्ञप्ति नहीं हो जाती तब तक भूमि वन विभाग के प्रबन्ध में रहेगी

> जे0पी0 कंपनी द्वारा दाखिल माइनिंग प्लान से भी स्पष्ट है विवादित भूमि पर किसी को आपत्ति प्रस्तुत करने का अधिकार नहीं है और न ही इस पर वादी भूमिधर हो सकता है.

सन! १६७२ फसली में हुए सर्वे एवं रिकार्ड आपरेशन में ग्राम-कोटा के वर्तमान विवादित नम्बरों के पुराने नम्बरान ५५,३७७ व १६२३ मौके पर जंगल झाड़ी, परती, बंजर, पहाड आदि के रुप में पाये गये. जो राज्य सरकार की सम्पत्ति थी. इसलिए उक्त पुराना नम्बरान को सुरक्षित वन बनाए जाने के लिए उपयुक्त पोत हुए विज्ञप्ति संख्या ६२८८/१४-२,४-१५ दिनांक ३०-४-१६७७ द्वारा भारतीय वन अधिनियम की धारा ४ के अन्तर्गत विज्ञापित कर दिया गया.

जब उ. प्र. राज्य सीमेन्ट कारपोरेशन बनाया गया तो पत्थर खनन हेतु भूमि की आवश्यकता होने पर इस क्षेत्र की भूमि पर वन विभाग का प्रबन्धन होने के कारण वन विभाग से भूमि के हस्तान्तरण की कार्यवाही चली. इसी बीच १६७६ में शासन द्वारा उ. प्र. राज्य सीमेन्ट कारपोरेशन के हक में ७५१ हेक्टेयर भूमि का खनन पट्टा २० वर्षो अर्थात वर्ष १६६६ तक के लिए स्वीकृत कर दिया गया और भूमि हस्तान्तरण की कार्यवाही रोक दी गयी. माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा कैमूर पर्वत माला के दक्षिण क्षेत्र में स्थित काबिज आदिवासियों एवं मूल निवासियों के समस्याओं के निदान हेतु प्रस्तुत रिट याचिका सं० १०६१/८२ वनवासी सेवा आश्रम बनाम उ.प्र. सरकार कें

निर्णय दिनांक २०.११.२६८६ के अन्तर्गत इस क्षेत्र में सर्वे व रेकार्ड आपरेशन की कार्यवाही करने का निर्देश प्रदान किया गया.

सन् १६८५ फसली के परताल में विवादित नम्बरान के किसी भी रकबे पर सीमेन्ट कारपेरेशन लि० डाला का कब्जा नहीं पाया गया और न हीं इनके द्वारा कोई आपत्ति की गयी. जबकि रेकार्ड आपरेशन की पूरी जानकारी उत्तर प्रदेश राज्य सीमेन्ट कारपोरेशन डाला को था.

वर्तमान सर्वे के दौरान विवादित नम्बरान के संबंध में वन बन्दोवस्त अधिकारी द्वारा वाद सं०३८८४/६१ राज्य सरकार बनाम वन विभाग कायम कर विवादित भू-खण्डों को सुरक्षित वन के पक्ष में निर्णित किया गया.

अपर जिला जज चोपन के न्यायालय में उक्तवाद की अपील संख्या ४७६६/६२ कायम हुई जिसमें अपर जिला जज महोदय ने अपने आदेश दिनांक २८.१०.१६६३ द्वारा उक्त भू-खण्डों को सुरक्षित वन के पक्ष में निर्णित किया गया.

तदनुसार मा० सर्वो० न्याया० के निर्देशानुसार उक्त अपीलीय निर्णय को अन्तिम मानते हुए विवादित आराजियात को सुरक्षित वन के खाते में दर्ज कर दिया गया.

इसी बीच उ०प्र०राज्य सीमेन्ट कारपोरेशन की चुर्क, चुनार व डाला की फैक्ट्रियां घाटे में चलने से उसे बीमार उद्योग घोषित कर दिनांक ८.१२.१६६६ को लिक्विडेशन के अधीन कर आफिसियल लिक्विडेटर नियुक्त कर दिया गया तथा उ०प्र० सीमेन्ट कारपेरेशन की परिसम्पत्तियों की बिक्री के लिए निविदा आमंत्रित किया.

टेण्डर नोटिस में विवादित भूमि को उ०प्र० सीमेट कारपोरशन की फ्री होल्ड भूमि नहीं दिखाया गया बल्कि लीज क्षेत्र में दिखाया गया. चूँकि १६७६ में दी गयी लीज वर्ष १६६६ में समाप्त हो गयी. इसलिए कानूनन सीमेन्ट कारपो० उसका भूमिधर नहीं हो सकता और न ही किसी को सुरक्षित वन के खाते में दर्ज भूमि को टेण्डर द्वारा बेचने का अधिकार था.

विवादित भूमि पर वन सरंक्षण अधिनियम १६८० लागू होता है और इस अधिनियम की धारा-२ के अनुसार कोई भी वन भूमि किसी राज्य सरकार द्वारा गैर वानिकी कार्य हेतु किसी व्यक्ति अथवा संस्था को केन्द्रीय सरकार की पूर्व अनुमति के नहीं दी जा सकती. मा० उच्च न्याया० भी उ०प्र० राज्य सीमेन्ट कार० के परिसमापन के सम्बन्धा में चल रहे प्रकीर्ण प्रार्थना प. सं० ४/६७ में पारित निर्णय दिनांक ११.१०.२००६ में भी यह स्पष्ट निर्देश दिया गया है कि जे०पी०एसोसिएट लि० के पक्ष में सीमेन्ट कारपो० के हक में पूर्व स्वीकृत लीज नियमानुसार नवीनीकृत होगी तथा इस सम्बध में वन सरंक्षण अधिनियम के अन्तर्गत आवश्यक अनुमति ली जाय.

जे०पी० कंपनी द्वारा लीज के नवीनीकरण हेतु प्रार्थना पत्र न देकर सुरक्षित वन के पक्ष में निर्णित भूमि के सम्बन्ध में वन सरंक्षण अधिनियम के अन्तर्गत आवश्यक देयताओं से बचने के लिए भारतीय वन अधिनियम की धारा६/११ के अन्तर्गत यह क्लेम प्रस्तुत किया गया है जो पोषणीय नहीं है.

जे०पी०कंपनी की हैसियत सबसक्वेन्ट परचेंजर की है जिसे भारतीय वन अधिनियम की धारा-४ के सम्बंध में आपत्ति प्रस्तुत करने का अधिकार नहीं है. विवादित भूमि के सम्बंध में उ०प्र० सीमेटं कारपो०की हैसियत महज लीज धारक की थी. जो वर्ष १६६६ में समाप्त हो चुकी है.

जे०पी० कंपनी द्वारा दाखिल माइनिंग प्लान से भी स्पष्ट है विवादित भूमि पर किसी को आपत्ति प्रस्तुत करने का अधिकार नहीं है और न ही इस पर वादी भूमिधर हो सकता है.

सन् १३७२ फसली खतौनी में पूर्व में राजकीय सीमेन्ट फैक्टी डाला के नाम पर इन्द्राज है भी तो वह फर्जी है. यहॉ लिपीकिय त्रुटिवश राजकीय सीमेन्ट फैक्टी डाला का इन्द्राज हो गया किन्तु आगामी वर्ष के खतौनी में विवादित भूमि सुरक्षित वन खाते में इन्द्राज किये गये.जहॉ तक विवादित भूमि पर भारतीय वन सरंक्षण अधिनियम सन् १६८० के प्राविधान लागू होने तथा इन भूखण्डों पर खनन कार्य करने की अनुमति भारत सरकार से लेने का प्रश्न है.

उपरोक्त विवादित भूमि पहाड़ खाते में अंकित होने के कारण सन् १६७७-७८ में धारा-४ भारतीय वन अधिनियम की विज्ञप्ति कर दी गयी और डाला सीमेन्ट फैक्टी के तरफ से कोई आपत्ति न किये जाने के कारण वन के हित में निष्कर्ष पारित किये गये.

उ.प्र. सरकार की ओर से सहायक जिला शास० अधिवक्ता-राजस्व श्री समशेर बहादुर सिंह ने भी अपने कथन में स्वीकार किया कि विवादित भुखण्ड सन् १३७२ फसली से पहाड़ी के रुप में अंकित है. भारतीय वन अधिनियम की धारा-४ में विज्ञापित किया गया है.

शासकीय अधिवक्ता ने विधि व्यवस्थाओं के विपरीत जे०पी०कंपनी का समर्थन करते हुए विवादित भूखण्ड को धारा-४ से पृथक करना कहते हुए न्याया० पर दवाब बनाना क्या उचित व न्याय संगत था? किसके दबाव में आकर शासकीय अधिवक्ता ने अदालत को गुमराह किया.

अतः उपरोक्त कथन का अध्ययन करने के उपरान्त निष्कर्ष यह हुआ कि जिलाजल सोनभद्र एफ.एस.ओ ओवरा,

सोनभद्र, शासकीय अधिवक्ता समशेर बहादुर सिंह उक्त तमाम अनियमियताओं को नजर अंदाज करते हुए विधि व्यवस्था के विपरीत जाते हुए महज जे०पी कंपनी को फायदा पहुँचाने के नियत से वन विभाग के आपत्ति को खारिज करते हुए जे०पी०कंपनी के पक्ष में माननीय विधि व्यवस्था के विपरित आदेश पारित किया.

लीज जमीन पर मालीकाना हक देकर उ.प्र. सरकार को प्रत्येक वर्ष व भारत सरकार को भी करोड़ों का नुकसान पहुचाया मालीकाना हक न देने से उक्त विवादित भूखण्ड राज्य सरकार के खाते में रहता.

उक्त आराजी संख्या की फाइल न्यायालय सहायक अभिलेख अधिकारी ओवरा वाद सं० १४६ व १४७ अन्तर्गत धारा-/५४ एल०आर० एक्ट जे०पी०एसोसिएट लि०बनाम राज्य सरकार निर्मित होने हेतु आया तब ए०आर०ओ ओवरा ने अपने निर्णय में निलामी स्वीकृत होने के उपरान्त दिनांक ११.१०.२००६ व १२.१०.२००६ के निर्णय द्वारा कम्पनी केस नं० ४ सन् १६६७ में मा.उच्च न्यायालय इलाहाबाद द्वारा उ.प्र. राज्य सीमेन्ट निगम लि० की समस्त परिसम्पत्ति के संबंध में सम्पत्ति को व्याख्यापित करते हुए which ever and where ever it lies की व्यवस्था देते हुए जे०पी०एसोसिएट लि०के पक्ष में सम्पुष्ट कर दिया है. किन्तु जे०पी०एसोसिएट द्वारा विक्रय विलेस प्रस्तुत नहीं किया गया है. ऐसी स्थिति में विवादित भू-खण्डों पर जे०पी० एसोसिएट का नाम अंकित किया जाना नियमानुसार सम्भव नहीं है. उक्त भूखण्डों से सुरक्षित वन के खाते की प्रविष्टि निरस्त हो तथा इन भूखण्डों पर उ.प्र. राज्य सीमेन्ट निगम लि० डाला का नाम अत्यक्रमणीय भूमिधर के रुप में अंकित करने का आदेश पारित किया.

बागवानी की जानकारी टेलीफोन पर

इलाहाबाद, पेड़—पौधा कैसे लगाये, कहॉ लगाये, बोनसाई के पौधे कैसे बनाएं, तमाम बीमारियां तथा सौन्दर्य, विभिन्न पेड़—पौधों की जड़पत्ती, फल—फूल से कैसे ठीक करें की जानकारी फोन नं0 9235668475 पर दोपहर 12 बजे से 6 बजे सायं तक निःशुल्क प्राप्त की जा सकती है.

उक्त जानकारी पर्यावरण संरक्षण समिति के संयुक्त सचिव दिवाकर अग्रवाल ने दी है.

अजामिल

निदेशक(जनसम्पर्क) पर्यावरण संरक्षण समिति, 4, पानदरीबा, इलाहाबाद

ऐसी सबल हो फाग की आवाज

"जन मानस" में हों-"स्नेह" से राज।
कभी न किसी की जाने पावे लाज।।
हो जावें सबके "सुलभता" से "सर्व" काज।
ऐसा निर्मित हो "विश्व स्नेह समाज"।।
सबको "आशीर्वादित" करें गोकुलेश्वर।
उजड़ने न पावे "अब" कोई भी घर।
उन्नति के हों सजें सर्वत्र सारे साज।
किसी की न किसी पर गिरने पावे गाज।।
"गोकुलेश्वर" की वंशी से फूटे ऐसा राग।
सर्वत्र प्रतिध्वनित हो मानवता का फाग।।
जनपक्ष का पक्षधर बने विश्व स्नेह समाज।
जनता जर्नादन करे उस पर नाज।।
"फणीन्द्र" पर करें "गोकुलेश्वर" ता-ताथ्या।
आओ मिलकर सभी खेलें होली भयूया।।
विश्व बन जावे स्नेह युक्त समाज।
ऐसी सबल हो फागुन के फाग की आवाज।

फणीन्द्र कुमार पाण्डेय, चम्पावत,उत्तराखण्ड

राजनेता आर्थिक सहायता भी दें

इलाहाबाद, वरिष्ठ एवं वयोवृद्ध साहित्यकारों, कलाकारों, पत्रकारों के अस्वस्थ होने की स्थिति में आम तौर से तमाम राजनेता उनको देखने और उनके घर पहुँच जाते है. घड़ियाली ऑसू बहाते है, सांन्तवना देते है, स्वस्थ होने की कामना करते है लेकिन उस व्यक्ति को तत्काल कोई आर्थिक सहायता नहीं देते है. साहित्यकार, कलाकार, पत्रकार पूरा जीवन बिना किसी आर्थिक लाभ की आशा में सृजनात्मक कार्य करता रहता है. परिवार के सदस्य अर्थाभाव में जीते रहते है लेकिन अपनी धुन की पक्का वह व्यक्ति अपने कार्य में लगा रहता है. दुःखद स्थिति यह है वह राजनेता सिर्फ अखबारों में न्यूज आइटम बनने के लिए उन अस्वस्थ व्यक्ति को देखने चले जाते है.

अंतराष्ट्रीय श्रोता समाचार के सम्पादक एवं वरिष्ठ पत्रकार अरुण कुमार अग्रवाल ने मिलने जाने वाले राजनेताओं से अपील की है वे सिर्फ सांत्वना न दें बल्कि तुरन्त अधिक से अधिक धनराशि स्वयं उन्हें प्रदान करें और यदि संभव हो तो सरकार से भी दिलवायें. इस प्रकार जब मिलने जाये तो सहयोग राशि लेकर ही जाए खाली हाथ नहीं।

व्यंग्य

कैसा होगा आपका नया वर्ष

डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव,
जालौन, उ.प्र.

सर्वप्रथम राजनीतिज्ञों की ओर इशारा करते हुए फाइव जीरो भविष्यानन्द जी महाराज ने कहा कि पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी राजनीति में लोकतंत्र का भरतनाट्यम चलता रहेगा। शनि की वक्रदृष्टि और सूर्य की टेड़ी चाल के कारण राजनीति में उथल-पुथल जारी रहेगी। निर्दलीय आयाराम-गयाराम सांसद/विधायक ही देश के बेहतर भविष्य के योग्य बने रहेंगे!

नये वर्ष को याद कर मन प्रफुल्लित एवं रोमांचित हो उठता है। पिछले वर्ष की अपनी व्यक्गित घटनाओं, देश में राजनीतिक उठा-पटक एवं आतंकवादी त्रासदी के टेलरों को सोचकर मन में एक अनाम चिन्त ने प्रवेश किया कि आगे आने वाला वर्ष कैसा होगा? मन की इस यक्ष चिन्ता के पीछे कई यक्ष प्रश्न भी उठ रहे थे, मन ने पुनः शेयर बाजार की तरह उछाल मारी और एक बात दिमाग में आयी कि इसके लिये ज्योतिषियों से क्यों न मिल लिया जाए और जाना जाए कि भारत का एवं सामान्य जनतंत्र का भविष्य कैसा होगा? इसी उधेड़बुन में सोचते-सोचते कब की नींद देवी आ गयीं, इसका पता ही नहीं चला, और मैं कब सो गया। इसके साथ ही स्वप्न में अपना भारत महान चमकने लगा (शाइनिंग इंडिया)। आज मुझे विश्वास ही नहीं हुआ कि गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, जैसी विशिष्ट योग्यता रखने वाला हमारा असहाय देश फिर से सोने की चिड़या जैसा कैसे लग रहा है? अपने सामने भव्य रूप में सोने के सिंहासन में विराजमान ज्योतिष श्री फाइव जीरो भविष्यानन्द जी महाराज और उनके समक्ष शाइनिंग इण्डिया के कर्णधार राजनेता सांसद, मंत्री, विधायक, फिल्म से जुड़ी हस्तियाँ, श्रीमती, श्रीमान् के साथ-साथ पुलिस प्रशासन से जुड़े आला अफसरों के साथ-साथ खेल जगत की सनसनी से लेकर माही, लिटिल मास्टर बल्ला लिए व्याकुल मुद्रा में खड़े हैं और, युवा वर्ग के लड़के-लड़कियाँ अपने-अपने नम्बर के इंतजार में थे। कवि, लेखकगण भी अपनी उपस्थिति को किसी मामले में किसी से कम नहीं समझ रहे थे! हमने भी मौके का फायदा उठाया, दो सौ का टिकट कटाया। इसके साथ ही अन्जान भीड़ में खो गया। और निश्चित हो गया कि अब हमारा भविष्य सुरक्षित हो गया है। भीड़ की अधिकता को देखकर (नये वर्ष को देखकर) फाइव जीरो महाराज भविष्यानन्द ने घोषणा की कि इस वर्ष भीड़ अधिक होने के कारण हम सभी वर्गों के लोगों को खानो में बांटकर सामूहिक रूप से भविष्य वाचन करेंगे। सर्वप्रथम राजनीतिज्ञों की ओर इशारा करते हुए फाइव जीरो भविष्यानन्द जी महाराज ने कहा कि पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी राजनीति में लोकतंत्र का भरतनाट्यम चलता रहेगा। शनि की वक्रदृष्टि और सूर्य की टेड़ी चाल के कारण राजनीति में उथल-पुथल जारी रहेगी। निर्दलीय आयाराम-गयाराम सांसद/विधायक ही देश के बेहतर भविष्य के योग्य बने रहेंगे! निर्दलियों के लिए यह सलाह कारगर होगी कि यदि वह खरीद-फरोख्त को वरीयता देते हैं तो उनका अपना भविष्य सुरक्षित रहेगा! यह बात विज्ञान भी प्रमाणित कर चुका है कि अपना भविष्य उज्ज्वल तो देश का भविष्य उज्जवल होने में कोई परेशानी नहीं होती है। सत्ता के कीचड़ में 'आपरेशन दुर्योधन' वाले सांसद कमल जैसी शोभा संसद में बढ़ाते रहेंगे! शनि की वक्रदृष्टि एवं महा साढ़े साती से बचने के लिए नेताओं को एक-एक दिन में कम से कम पचास-साठ बार अपने वचनों को बदलने की पूरी ईमानदारी बरतनी होगी। तभी आने वाले चुनाव में उनकी जीत सुनिश्चित होगी! राहु की महादशा से बचने के लिये राष्ट्रीय स्वाभिमान को सदैव ताक पर रखने वाले कर्णधार ही स्थाई सरकार दे सकते हैं। संसद/ विधान सभा के अंदर, नेता, मंत्री भले ही एक दूसरे पर गुर्रायें पर विरोधी नेताओं के घर जाकर भरत मिलाप करना परम्परागत ढ़ंग से जारी रखने का शुभ योग इस वर्ष भी बना रहेगा।

फिल्म जगत से जुड़ी हस्तियों की ओर मुखातिब होते हुए फाइव जीरो भविष्यानन्द जी महाराज ने कहना शुरू कर दिया कि फिल्मों में धांसू इन्ट्री के लिए वस्त्र उघाड़ू, अति कम वस्त्रों वाली अभिनेत्रियों के लिए यह वर्ष उन्हें प्रथम श्रेणी (नम्बर वन) में ले आयेगा। फास्ट फूड की तरह प्रेमी बदलने वाली अभिनेत्रियों के लिए बॉलीवुड-हॉलीवुड में उनके लिए अड़तालीसों घण्टे (चौबीस घण्टे बोनस में छूट) खुले रहेंगे। विपाशा बसु, नगमा, सुष्मिता, रानी मुखर्जी, ऐश्वर्य राय की ओर इशारा करते हुए भविष्यानन्द जी महाराज ने कहा कि जिस समय मैं आप लोगों को परदे पर देखता हूँ, तो हमारा सिर गर्व से

हजारों-हजार फीट ऊँचा हो जाता है। कपड़ों की परवाह किये बिना आप अपना अभिनय जारी रखें भारत के उज्ज्वल भविष्य के लिए यह आवश्यक है! सैफ, गोविंदा बूढ़े अमिताभ, आमिर खान, शाहरुख खान, सनी देओल की ओर इशारा करते हुआ कहा कि आप लोगों का चन्द्रमा साथ नहीं दे रहा है। इसलिये आप लोगों को सलाह है कि कामयाब हीराइनों की गणेश परिक्रमा करते रहें। लगातार पिट (फिल्म से बाहर) रहे अभिनेताओं के लिए यह जरूरी हो जाता है कि वह अच्छे अभिनय को वरीयता न देकर रोमांस की ओर अधिक ध्यान दें! मीडिया वालों की ओर इशारा करते हुए फाइव जीरो भविष्यानन्द जी महाराज ने कहा कि शनि की महादशा से बचने के लिए कैमरों की दिशा ही आप लोगों को पिछले वर्ष की तरह बदलनी पड़ेगी! सुपर फास्टातिफास्ट चैनलों के लिये प्रगति तब तक बनी रहेगी, जब तक कि आप अपने कैमरों को दूसरों के बेडरूम और बाथरूम की ओर अग्रसर करते रहेंगे। राहु की महादशा से बचने के लिये यह जरूरी हो जायेगा कि अच्छे चेहरे पहचाने नहीं जा सकेंगे, क्योंकि अच्छे चेहरे सदैव अच्छे नहीं होते।

प्रशासन एवं पुलिस की ओर मुताबित होते हुए फाइव जीरो भविष्यानन्द जी महाराज ने कहा कि जो प्रशासक नीतियों, सिद्धान्तों और जनता का मूड ध्यान में रखकर काम करेगा, उसे राहु एवं सूर्य की वक्रदषष्टि को सहना होगा, अर्थात बना-बनाया कार्य बिगड़ जायेगा। चोरी करने वाले, ईमान, धर्म तथा नैतिकता का त्याग करने वाले अधिकारी ही प्रशासन में दक्ष एवं सफल माने जायेंगे। नजीर के लिये उत्तर प्रदेश की पुलिस भर्ती घोटाला इसका प्रमाण है। त्याग का अपना महत्त्व होता है, चाहे वह सत्य ही क्यों न हो! और सत्य के लिए बड़े से बड़ा त्याग तो करना ही पड़ता है। अर्थात नियम, कायदे, शालीनता को धो-पोंछकर अलग रखने वाले प्रशासकों को आने वाले वर्ष में प्रमोशन मिलने के पूरे-पूरे अवसर रहेंगे। पुलिस की परम्परागत निष्क्रियता से चोर उचक्कों का उद्योग दिन दूना रात चौगुना बढ़ता रहेगा और शरीफ को लुकने-छिपने का स्थान सिद्दत के साथ तलाश करने पड़ेंगे! पल में तोला, पल में माशा करने वाली पुलिस की छवि सुधारने के लिये सरकार उनकी वर्दी बदलने पर विचार कर सकती है। चन्द्र एवं मंगल की आपसी शत्रुता जारी रहने से सुधार के पुलिस में कम अवसर उपलब्ध हैं फिर भी सरकार पुलिस की छवि सुधारने के लिए फैशन डिजाइनरों की मदद ले सकती है। इससे तोंदिल पुलिसियों की सेहत रैंप पर उतरने से इस वर्ग को कई क्षेत्रों में वसूली के उचित स्कोप मिलने के अवसर खुले नजर आयेंगे। शनि एवं सरकार की मार से बचने के लिये अधिकारियों को ऐसी दुलमुल वाली टेक्नो कलमें रखनी होंगी जो वही लिखें जो उनके आला अफसर चाहते हैं।

उद्योगपतियों की ओर इशारा करते हुए फाइव जीरो भविष्यानन्द जी महाराज ने कहा कि उद्योग जगत में फैन्टास्टिक इन्ट्री के लिये बिना पूंजी के लगाये अपहरण उद्योग नये साल में पिछले वर्ष की तरह फले-फूलेगा एवं इसके साथ ही विदेश में पूंजी निवेश करने वाले भारतीयों पर सूर्य एवं बष्हस्पति की शुभ दशा रहने के कारण वे अपने राष्ट्रीय स्वाभिमान को फुटबाल की गेंद की तरह प्रयोग करते रहेंगे। चूँकि इस क्षणभंगुर दुनिया में सब कुछ क्षणभंगुर है, इसलिये भुखमरी, गरीबी, अभाव, ओछी मानसिकता वाले व्यापारियों की पूंजी दिन दूना रात सौ गुना होने के चांस बने रहेंगे! शनि की साढ़े साती महादशा से बचने के लिए व्यापारी, दुकानदार, उपभोक्ताओं को सिकन्दर की तरह लूटकर वापस खाली हाथ जाने पर बाध्य करेंगे और बिहारी की नायिकाओं की तरह स्पेशल आफरों की मार वर्ष भर अपना कमाल करती रहेंगी। विदेश में बसे भारतीयों का स्टेटस सिम्बल तभी बरकरार रहने के आसार हो सकते हैं, जब वह अपने राष्ट्रीय स्वाभिमान धर्म, ईमान, आत्मा को हाशिए पर रखकर जोश खरोश से दूसरे देशों के प्रति निष्ठा में लगे रहेंगे, क्योंकि अपने देश की निष्ठा में कुछ नहीं है बल्कि विदेशी निष्ठा तो डालरों में रहती है। राहु की वक्रदषष्टि के कारण शेयर बाजार की भांति आतंक, भय, बीमारियाँ (शारीरिक से ज्यादा मानसिक) उछाल मारती रहेंगी।

चन्द्रबदनी श्रीमतियों एवं सदाबहार श्रीमानों की ओर इशारा करते हुए फाइव जीरो भविष्यानन्द जी महाराज ने कहा कि अगले नये वर्ष में वही नयी नवेली पत्नी घर में सम्मान पाने का हक पायेगी, जो अंग्रेजी में सोलहों आने खरी कूटनीति अर्थात् फूटनीति को अपनी साड़ी के पल्लू में बांधे रखेगी क्योंकि इससे पति को कब्जे में रखने में उसे परेशानी नहीं होगी! राहु, सूर्य की ओर एवं सूर्य, राहु की ओर अग्रसर होने के कारण दाम्पत्य जीवन में खींच-तान बैलगाड़ी रफ्तार में जारी रहेगी। राहु की महादशा होने के कारण व्यक्ति (पति) चाहे कितना पढ़ा-लिखा, सलीकेदार और चारित्रिक शुद्धता के प्रमाण पत्र वाला, कमाता, खाता-पीता ही क्यों न हो, किसी ऐरे-गैरे सड़क छाप सिगरेट से धुंधआते, प्रेमिका के पिता की ही रोटियों पर पलते बेराजगारी प्रेमी से मात खाता नजर आयेगा। पतियों में राहु महाराज की छाया पड़ने के कारण आत्मबल की कमी पिछले

वर्ष की तरह इस वर्ष भी जारी रहेगी। कुछ पत्नियों के लिए चन्द्र की कृपा होने के कारण यह वर्ष प्रेमी (नायक) वाला एवं पति परमेश्वर (खलनायक) वाला होने के अवसर प्रदान करेगा। वैश्वीकरण एवं भूमण्डलीकरण के मार्ग को प्रशस्त करने वाले अपने सगे भाईयों की ओर (आतंकवादियों) इशारा करते हुए फाइव जीरो भविष्यानन्द जी महाराज ने कहा कि सच्चे अर्थों में आप ही विश्व का कल्याण कर रहे हैं! आप तो बस विमानों, संसदों एवं व्हाइट हाउसों पर इसी तरह निशाना साधते रहिए, जरूरत पड़ने पर अणुबम-परमाणु बम को खिलौने की तरह इस्तेमाल करते रहिए, कोई माई का लाल संसार में नहीं है जो तुमसे टक्कर लेगा। शनि एवं राहु को खुश करने के लिए मेरे भाई मेरी एक बात गांठ में बांध लोगे तो तुम्हें कभी पराजय का मुँह नहीं देखना पड़ेगा वह यह कि जिस देश में रहो उसे अपना कभी मानो ही नहीं, जहाँ का खाओ उसी को बरबाद करो, जितने अधिक जहाँ भी तुम धमाके करोगे, उतनी अधिक सफलता आपके चरणों में चरण वंदन करती रहेगी। यही पथ आपके भविष्य का उज्ज्वल मार्ग प्रशस्त करेगा।

युवाओं (लड़के एवं लड़कियों) की ओर इशारा करते हुए फाइव जीरो भविष्यानन्द जी महाराज ने कहा कि जो युवा एक दूसरे से लवियाते हों उन्हें इस प्रकरण को टालते रहना होगा, क्योंकि मंगल का चंद्र से टकराव होने के कारण मेल सम्भव नहीं है। सिंह के प्रभावी होने से सूर्यमुखी होने वाली लड़कियों से प्रेमी सावधान रहेंगे साथ ही उन्हें अपनी जीवन साथिनी के पारिवारिक सदस्यों का भय बरकरार रहेगा। प्रेम करने वालों को नये वर्ष में कथकली न करना पड़े, इसलिये ऐसी लड़की को अपना साथी चुनें जो सदैव भरत नाट्यम की मुद्रा में रहे। वहीं प्रेम करने वाली लड़कियों को भी ध्यान रखना होगा कि उनका जीवन साथी पाकेट का कितना पक्का है! साथ ही उसके पास कम से कम बाइक के साथ-साथ लक्जरी मोबाइल फोन की सुविधा तो हो ही। पढ़ने वाली लड़कियों को ध्यान रखना होगा कि उनको चाहने वाला लड़का पढ़ाकू कम लड़ाकू अधिक होना चाहिए, इसके साथ ही यह भी महत्त्वपूर्ण बात हो कि क्रिमिनलों के बीच उसे पूछा जाता हो, क्योंकि नकल करते समय उसे असुविधा न हो। पुनः युवाओं की ओर इशारा करते हुए भविष्यानन्द जी महाराज ने कहा कि तुम्हें देखते ही मुझे अपना बचपन याद आ जाता है और निराश होने की बात नहीं है, आगे आने वाला वर्ष मंगल ग्रह की प्रसन्नता के कारण पारिवारिक बंधन टूटेंगे और लड़कियों को लड़कों की भांति रिश्ता रिजेक्ट करने का पूरा अधिकार प्राप्त होगा! यह वर्ष पिछले वर्ष की तरह पढ़ने वालों को पढ़ाई पर कम एवं नकल करने पर अधिक दिमाग लगाना होगा। छात्रों को अपनी जुगाड़ टेक्नोलोजी पर विशेष ध्यान रखना होगा, जिससे उनकी कापियों में नम्बर सही चढ़ सकें।

दुबले-पतले, सूखे होंठ वाले एवं मनसूहियत भरे चेहरों को देखते हुए फाइव जीरो भविष्यानन्द जी महाराज ने कहा कि पिछले वर्ष की भाँति बष्हस्पति नवम् खाने में रहने के कारण नियमित पढ़ाने वाले शिक्षक इसी तरह दीन-हीन अवस्था में बने रहेंगे! मेहनती, कर्मठ, ईमानदार और नियम कायदे, शालीनता से चलने वाले शिक्षकों का भविष्य केतु की सीधी टक्कर होने के कारण भविष्य अन्धकारमय बना रहेगा। वर्तमान साल में उन्हें कौड़ी के दाम भी लोग नहीं पूछेंगे। अधिक से अधिक कक्षा में न पढ़ाने वाले शिक्षक एवं कोचिंग को मुख्य वरीयता देने वालों की झोली भरी रहेगी। अपनी संस्था के प्रधान की चाटुकारिता एवं गणेश परिक्रमा करने वाले व्यक्ति ही भविष्य में प्रमोशन के पात्र होंगे।

बैट, बैडमिंटन, रैकेट फुटबालरों की ओर इशारा करते हुए फाइव जीरो भविष्यानन्द जी महाराज ने कहा कि मंगल और शनि में इस साल जबरदस्त टकराव रहने के कारण, टेनिस एवं क्रिकेट में उन्हीं सितारों का जलजला रहेगा जो अच्छा खेल-खेलने के बजाय मैच फिक्सिंग पर अपना ध्यान अधिक देंगे और कोच के कहने से सौदेबाजी में हाँ-हाँ करते रहेंगे। टेनिस खेलने वाले खिलाड़ियों के लिए चन्द्र की स्थिति ठीक होने के कारण खेल चाहे कितना ही खराब क्यों न हो पर उनकी स्कर्ट की लम्बाई कम से कम होने से दर्शकों की संख्या में इजाफा बना रहेगा।

फटाफट खिलाड़ियों की विजयी टीम (ट्वेन्टी-ट्वेन्टी) की ओर गम्भीरता से अवलोकर करते हुए फाइव जीरो भविष्यानन्द जी महाराज ने कहा कि मेरे लिटिल मास्टरों इस जीत को बरकरार रखने के लिये खेल पर कम ध्यान रहे एवं विज्ञापन पर अपने चेहरों को ज्यादा चमकाना होगा! यदि परदे पर चेहरे नहीं चमकेंगे तो नायिकायें आपको लिफ्ट नहीं मारेंगी। मंगल एवं बष्हस्पति को मजबूत करने के लिये नवोदित खिलाड़ियों को बॉलीवुड की नायिकाओं पर ध्यान केन्द्रित करना होगा, क्योंकि जरूरी नहीं कि अगले टीम मैनेजमेन्ट में उनका खेलना जारी रहे, इसलिये टीम मैनेजमेन्ट से जरूरी है होम मैनेजमेन्ट।

साहित्यकारों एवं कवियों के चेहरों की ओर अवलोकन करते हुए फाइव जीरो भविष्यानन्द जी महाराज ने कहा कि- राहु, शनि एवं मंगल की ग्रह दशा से उपेक्षित लेखकों की उपेक्षा पिछले वर्ष

की भांति इस वर्ष बनी रहेगी। छपास नामक संक्रमण बीमारी अपने विकराल रूप में इस वर्ष भी जारी रहेगी। हड्डी तोड़ मेहनती, आंख फोडू पढ़ाकुओं के प्रति शनि की वक्रदृष्टि बनी रहेगी, जिससे वे मारे-मारे फिरेंगे, इसके विपरीत सूर्य के नवम खाने में आने से कटियामार लेखकों (नकलचियों) का भविष्य निष्कंटक बने रहने की सम्भावना है। महान साहित्यकार बनने एवं साहित्यिक पुरस्कार झटकने के लिए कथाकारों को अपनी कथा में सुरेन्द्र मोहन, गुलशन नंदा, रानू, जेम्स हेडली, वीरेन्द्र यादव की रचनाओं को कोड करना होगा। बृहस्पति की नाराजगी मौलिक लेखक-लेखिकाओं को झेलनी पड़ सकती है! जे शुद्धता, नयापन, मौलिकता को अपना मानक मानते हैं। घरेलू लेखिकाओं के लिए अभी शनि महाराज की साढ़े साती बरकरार होगी। शनि की साढ़े साती को कम करने के लिये घरेलू कवयित्रियों/लेखिकाओं के लिए 'बेलन', कलछीं दोनों एक साथ लेकर चलना शुभ पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी बना रहेगा। शनि को नियंत्रण में रखने के लिए, साथ ही स्त्री चेतना के लिये यह आवश्यक हो गया है कि (सरदार जी लोगों की तरह कमर में कटार) घरेलू लेखिकाओं की कमर में में एक छोटी कुल्हाड़ी ठुसी रहे। तभी सदियों से सदाबहार पतियों/लेखकों की उचित देखभाल हो सकेगी। प्रशासकों एवं वितरकों पर राहु-केतु की प्रसन्नता की वजह से यह साल तुंदियाने/मुटियाने वाला साबित होगा। वहीं लेखकों के लिए दुविलियाने/सीकियाने वाला होगा। गम्भीर एवं आलोचना प्रधान साहित्य छापने के स्थान पर लोकसमझ एवं मनोरंजन प्रधान साहित्य प्रकाशन करने वाले प्रकाशकों के लिए यह साल उन्हें बुलंदियों (नोटों पर) पर पहुँचा सकता है। मारकेस गृह की वक्रदृष्टि होने के कारण आलोचक/कवि लेखक मारे-मारे छुट्टा जानवरों की भांति टहलते रहेंगे!

अन्त में बढ़ती भीड़ की हलचल को देखते हुए फाइव जीरो भविष्यानन्द जी महाराज ने कहा कि मेरे प्रिय शिष्यों घबड़ाने की कोई बात नहीं है, बल्कि हार्दिक प्रसन्न होने की बात है कि हम तो अनादिकाल से लोगों का भविष्य देखते/वांचते आये हैं, क्योंकि हमने जितना सुख सतयुग में देखा/भोगा है उसका कुछ ही अंश आज (कलियुग) के प्रारम्भिक युग में देखने को मिल रहा है। इसमें घबड़ाने की कोई बात नहीं है। हम अभी तो नीति, धर्म, सिद्धान्त, ईमानदारी, स्वाभिमान, आत्मा, नियम, कायदे, शालीनता की दुहाई देकर लोगों को शर्मिन्दा कर देते हैं यानी शब्दों में अभी बजन है। भविष्य में आने वाले वर्षों की ओर मैं जब देखता हूँ तो हमें हैरानी होती है, इसलिये आने वाले वर्षों के बारे में मैं अधिक बताता नहीं हूँ वह इसलिये कि आप सब में आशा का संचार बना रहे, आशा ही जीवन, विकास, मृत्यु है। नये साल का स्वागत करिये जो एक नयी आशा एवं विश्वास के साथ आपके दरवाजे पर दस्तक दे रहा है। दरवाजे पर जोर-जोर से आहट (थपथपाने की) हुई। आवाज आई प्रोफेसर साहब दस बज रहे हैं, अभी भी खुमारी है क्या? हम झट से बिस्तर से उठ बैठे! सामने देखा कि लालू पोस्टमैन भाई अपनी चिरपरिचित कपिल देव जी वाली मुस्कान में खड़े थे। हमने उनके द्वारा दी गयी ग्रीटिंग को हाथ में लेते हुए कहा कि नया वर्ष मंगलमय हो भईया; इसके साथ ही स्वप्न का ध्यान हमारे जेहन से धीरे-धीरे गायब होता चला गया!

+++++++++++++++++++++

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा प्रकाशित पुस्तके

1.**मधुशाला की मधुबाला :लेखक**:राजेश कुमार सिंह**मूल्य** 10.00
2.अपराध **लेखक** : राजेश कुमार सिंह मूल्य : 10.00
3.सुप्रभात दस रचनाकारों का संग्रह मूल्यः 10.00
4.**निषाद उन्नत संदेश लेखकः** चौ0 परशुराम निषादमूल्यः 10.00
5.**एक अद्‌भुत व्यक्तित्व** लेखकःगोकुलेश्वर कु0द्विवेदी मूल्यः10/00
6.**रोड इन्स्पेक्टर**—लघु उपन्यास **लेखकः** गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी मूल्यः 20.00
7. लर्निग कम्प्यूटर विद फन भाग—1 **लेखकः** गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी मूल्यः 45.00
8. लर्निग कम्प्यूटर विद फन भाग 2 **लेखकः** गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी मूल्यः 35.00
9. **कैसे कहूँ? संपादकः** सूर्य नारायण शूर मूल्यः 100.00
10. **काव्यांजलि संपादकः** गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी मूल्यः 50.00

पुस्तकों के लिए भेजें/लिखें: मनीआर्डर/डी.डी.
सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी—93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

विवादों की संस्कृति में खण्डित होता अपनत्व

प्रो. प्रेम मोहन लखोटिया,
जयपुर, राजस्थान

शनैः शनैः यह एक सामाजिक चलन की बात बन गई और वाद विवाद की संस्कृति जिसका प्रयोग, विवेक की बातों की ग्राह्यता बढ़ाने और विचार विनिमय के माध्यम से सुनिर्णय का आधार बनाने के लिए किया जा सकता था, वही हमारे आपसी मत-विभाजन, विरोध और विद्रोह और उसके आगे वैमनस्य और वैर का प्रसारक बन गया। संग और सान्निध्य के स्थान पर भेद और भीतरी घात का प्रचलन हुआ।

सभ्यता के प्रचलन ने जन्म दिया बौद्धिक उर्जस्विता को, मौलिक होने की प्रखरता को। एक मान्यता *''मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना''* का नवीनीकरण किया नए सूत्र में *''हम सहमत हैं असहमत होने के लिए''*। सद्भावना हठ में और अहम् में परिवर्तित होने लगी और सोच तथा दर्षिटकोणों में द्वन्द्व और टकराहट मुखर हुआ। विविधता में एकता से अधिक प्रचलित हुई एकता में विविधता, मौलिकता के आयाम के नाम या समूहगत पक्षधरता या अपनी सोच के तार्किक समर्थन के नाम।

शनैः शनैः यह एक सामाजिक चलन की बात बन गई और वाद विवाद की संस्कृति जिसका प्रयोग, विवेक की बातों की ग्राह्यता बढ़ाने और विचार विनिमय के माध्यम से सुनिर्णय का आधार बनाने के लिए किया जा सकता था, वही हमारे आपसी मत-विभाजन, विरोध और विद्रोह और उसके आगे वैमनस्य और वैर का प्रसारक बन गया। इससे विचार ही नहीं, आस्थाओं का घमासान भी प्रेरित हुआ। संग और सान्निध्य के स्थान पर भेद और भीतरी घात का प्रचलन हुआ। एकात्मता की जगह एकान्तता का अनन्त प्रादुर्भाव हुआ।

आज हमारे परिवार और समाज अनेक प्रकार के वर्गों में बंट गए हैं। देश में भाषा, परिधान, जातियों और पर्व परम्पराओं का वैभिन्य कब नहीं था किन्तु हमारा देश कभी इतना बंटा बंटा नहीं था। अब दल हैं, पंथ हैं, एक धारावादी संघ है, अपने अपने गुट हैं, अपने अपने अपने समर्थक हैं, अपने अपने सैन्य-विस्तार की भांति शक्ति-सम्पुट है और उसके बावजूद भी हर कोई अकेला है, विवश है, न्यूनता और अल्प-संख्यता के भाव से आक्रान्त है। देश आजाद है, साठ साल का तुमुल है और हर कोई संघर्ष में है अपनी अस्मिता और वजूद बचाने के लिए। सबको एक फ़िक्र ने घेरा है कि कोई उसकी क्यों नहीं सुनता है? एक देश, एक विश्व कृकृ हर कहीं टुकड़े बिखरे हैं कृकृ गाना ही याद आता है *इस दिल के टुकड़े हजार हुए, कोई यहां गिरा, कोई वहां गिरा* कृकृ। संसद के पहलवान तो क्या, देश के नागरिक घरों, समूहों और सड़कों पर दो पल एक साथ हुए नही कि तर्क-वितर्क और वाद-विवाद की भंवर में डूबते से नज़र आते हैं। कवि वीरेन्द्र मिश्र ने एक बहुत प्राणवान गीत में लिखा था -

कृति आकृति भाषा संस्कृति के वास्ते,
बने हुए हैं मिले-जुले से रास्ते।
आस्थाओं की टकराहट से लाभ क्या?
मंजिल को हम देंगे भला जवाब क्या?
हम टूटे तो टूटेगा यह देश भी,
मैला होगा वैचारिक परिवेश भी।

आज हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक तथा राष्ट्रीय जीवन का कहीं से भी दृश्य देखिए, हममें टकराहट है, अपनी अपनी मान्यताओं को लेकर हर स्तर पर द्वन्द्व है। कभी कभी तो द्वन्द्व इतना मुखर हो उटता है कि निष्कर्श एक ही है, प्रस्तुति या भाषा या विचार श्रृंखला एक नहीं है. अर्थशास्त्र में विश्व के सवार्धिक उच्च सम्मान नोबल से नवाजे गए डॉ. अमर्त्य सेन ने देश की वैचारिक संस्कृति पर एक अत्यन्त पठनीय पुस्तक लिखी ''द' आर्गुमेन्टेटिव इंडियन'' - ''तार्किक भारतीय''। पुस्तक ने भारतीय मनीषा पर बहुत ही अनुपम विश्लेषण किया है किन्तु भारतीयों की हर भांति के विवादों में उलझने की आदत का भी सांगोपांग वर्णन किया है। यह रंज की बात है कि जिस देश में शाश्वत मूल्यों की परिधि में मौलिक चिन्तन के संस्कार छोटी वय से ही पल्लवित किए जाते थे; जहाँ धर्म से अधिक प्रभाव दर्शन का होता था और दर्शन की गूढ़ता को आत्मसात करने के लिए अध्यात्म की प्रेरणा प्राथमिक मानी जाती थी, वहां कभी अपनी पहचान के लिए, कभी अपनी जमात या धर्म-पंथ की पहचान के लिए, कभी अपनी बौद्धिकता की प्रखरता प्रकाशित करने के लिए हमने बात बात में विवाद की संस्कृति अपना ली और सो भी संवैधानिक अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम। इस देष में पंथों का हुजूम, राजनैतिक दलों की उफान खाती विविधता, संवादकर्मियों की गढ़ी बढ़ी विश्लेशण वाली प्रतिद्वंदिता और तिस पर अपने अपने स्वार्थ के कारण अपनी अपनी ढपली और अपना अपना राग वाली बहुलता ऐसी फैली है कि हम सोचने पर मजबूर हैं कि हममें समानता ही क्या है और ऐसा क्या है जो हमें परस्पर विदेशी नहीं बनने देता। अब राजनैतिक नायक और धर्मोपदेशक अपने प्रसारकों की सेना के साथ हमको

इतना क्लीव बनाने लगे हैं कि हम चाह के बावजूद अपनी राह ढूंढने के बदले, ज़िल्लत से बचने के लिए, उनके पीछे हो लेते हैं और अपने मन की अपूर्त आकांक्षा की वितृश्णा और कुण्ठा में हर किसी से तार्किक प्रवाद या बहस कर अपनी परिचिती स्थापित करने का छलना भरा प्रयास करते हैं। हम अंदर ही अंदर मानते हैं कि हमारा निर्माता, जनक और निर्णायक एक ही है, हमारे भीतर उच्छ्वास भी एक ही है, हमारे गंतव्य एक ही है, मंतव्य भी कदाचित्. ऐसे में कहाँ से टिकेगी हमारी राश्ट्रीय अस्मिता और मानवीय वैष्विकता? सार्वभौमिकता और सम्प्रभुता का आलाप करते हुए हम विक्षिप्त से नहीं होंगे तो और क्या होंगे? तक़रारों का धर्म हमारा, कोई भी क़रार कहाँ से हो?

एक जनवादी नायक ने एक बार हमारे संसद में खुलासा किया था कि वे विरोध में बैठने के कारण सरकार की नीतियों का खंडन कुछ काल्पनिक आधारों पर इसलिए करते हैं ताकि उन आधारों का भी कोई आधार नहीं रह जाए। राजनीति में वाद-विवाद होना लाजिमी है मगर राजनैतिक दुश्मनी या अपने स्वार्थ का ऐसा दुःखद अनुभव जैसा हमने शास्त्रीजी के उपरान्त किया है, वह साठ सालों की तथाकथित परिपक्वता के बीच अचिन्तनीय है। देष की राजनीति बहुतों की दिलचस्पी के बाहर की चीज हो गई; धर्मोपदेश या सत्संग भीड़ जुटाने के बाद भी जीवन से परे हो गए किन्तु हमारे युवकों और वयस्कों, यहां तक कि हमारे बच्चों और तरुणों में विवाद की आदत नशीली हो गई है। अब हमारे साहित्य में विवाद, हमारे संगीत में विवाद, हमारे व्यापार व्यवसाय में विवाद, हमारे खेलों में विवाद, हमारे समूहों और दलों में विवाद, षिक्षा और आरक्षण में विवाद, दाम्पत्य और गृहस्थी में विवाद, सम्बन्धों में विवाद, साक्षियों में विवाद, दण्ड में विवाद, न्याय में विवाद, आज्ञाकारिता और अनुषासन की अपेक्षा में भी विवाद! हम जी रहे हैं विवादों की संस्कृति में और हमारी प्रगतिशीलता नए विवादों की जननी बनी है। हम नहीं समझ पा रहे कि सभ्यता और संस्कृति एक बात नहीं है और कोई नई धारा या प्रवृत्ति अपने आप में संस्कृति का घटक नहीं होती। संस्कृति में साम्य भाव वाली कृति होती है, न कि विशमताओं को बढ़ाने वाली क्रियात्मकता। इस साम्य भाव के बिना न तो समन्वय आता है और न ही सामंजस्य जिसका मृदु परिफल होता है सद्भाव और अपनत्व, आत्मीयता और परस्पर सहिश्णुता, एक दूसरे के लिए मनोरम बनने की उमंग। हम अपने से भिन्न कुछ भी सुनने, समझने और स्वीकार करने से जब उचटने लगें तो हमें समझ लेना चाहिए कि हमारे व्यक्तित्व का अपक्षरण ही हो रहा है. हममें एक अहमन्यता का प्रवेष हो रहा है भले ही हम कितने भी ज्ञान, साधन और अधिकारों से सम्पन्न हो रहे हैं। तब हमारी सभ्यता भी हमें पीछे धकेलती होती है। पष्चिम जगत के वासी या अधुनातन जीवन शैली में समृद्ध लोग इसका दुःख झेल रहे हैं-हमारे सामने यह तथ्य बहुत भली प्रकार प्रकट हो चुका है। हम अपनी शहरी सभ्यता के प्रलोभन में इस पीड़ा की चपेट में आ चुके हैं। अब हर मोड़, चौराहा, नगर, कबीला हमें लगे बेगाना। हम भी किसी के हो ही नहीं पाते। परिवार ऐसे इकाई तंत्र में फंसे और जन-संख्या का नियंत्रण बोध हम पर ऐसे कसा गया कि हम में से हर कोई, बच्चों सहित, घर परिवार से बाहर एक सुकून का घरौंदा तलाशते हुए दिखाई देता है। हम औरों की बात को तवज्जो देते हैं और फ़ुर्सत में कहावतों से जी बहला लेते हैं -*घर का जोगी जोगना, आन गांव का सिद्ध* और *घर की मुर्गी दाल बराबर*। यही बात हमें अपनी भाशा, परम्परा और परिधानों; अपने समाज और राष्ट्र की आज तक सर्वमान्य प्रणालियों तथा अपनी मौलिक संस्कृति के आयामों से दूर कर रही है और जैसे हम यह नहीं कहते कि *दूर के ढोल सुहावने* अपितु बड़े आग्रह से अभिमान के साथ घोशित करते हैं कि हम ही ढोल गंवार थे अपनी उस पुरानी पहचान में जो सबको जोड़ कर रखती थी। अब हम में से प्रत्येक को ''मैं'' होना है, ''हम'' बन कर कोई सब्जी तरकारी थोड़े ही बनना है। राजकपूर ने एक गाना गाया था जो एक वक़्त सबकी जुबान पर चढ़ा था *मेरा जूता है जापानी, ये पतलून इंगलिस्तानी, सर पे लाल टोपी रूसी,* ***फिर भी दिल है हिन्दुस्तानी***। अब लगता है कि विश्व संस्कृति और साथ ही ''कुछ भिन्न'' होने के अधिकार के चक्कर में हम एक से अहमी और वहमी बनने का ख़तरनाक खेल खेल रहे हैं जिसकी कीमत हम चुकाएंगे सारा अपनापा खोकर, हर दूसरे पर संदेह कर या उस पर अपने आप को थोप कर।क्या हम पुनः समन्वय और अंतरंगता के कदम्ब उगाने का प्रयास करेंगे या अपनी अपनी विष्टिता वाली और विवाद के कांटों से लोगों को खरौचने वाली नागफनियां फैलाते रहेंगे -यह निर्णय हमको करना है। सुनिर्णय, समन्वय और समर्पण के तीन आयामों बिना जो सभ्यता आएगी, वह कुछ भी हो, मानव की दिव्य संस्कृति तो नहीं ही होगी। पहचान की तलाश में हम खो देंगे अपनी पहचान ही कुछ ऐसे कि हम खारे बोल ही बोलेंगे और खारे बोल सुनने को भी मजबूर होंगे। कुछ काम नहीं आएगा ज्ञान, कुछ मान नहीं बढ़ाएगी बाहर वाली षान।

फैजाबाद के प्रथम स्वतंत्रता सेनानी: मौलवी सिकन्दर शाह

✍ **डॉ० मंजु शुक्ला,** निदेशक,
श्रमिक विद्यापीठ,लखनऊ

लार्ड डलहौजी ने जब अवध के डगमगाते तख्त को सामाजिक उत्थान के नाम पर अपने अधिकार में लिया, उस समय वाजिद अली शाह की छत्रछाया में अवध नर्तकियों, गजलों और गुलामों का क्षेत्र समझा जाता था. सन् १७५६ में नवाब वाजिद् अली शाह लखनऊ से कलकत्ते एकांतवास के लिए प्रस्थान कर गये. यहीं से सन् १८५७ के विद्रोह की नीव पड़ जाती है. सन् १८५७ के विद्रोह की विशषता रही कि यह आम जनता द्वारा अपने सम्मान की रक्षा और आर्थिक दबाव के कारण किया गया विद्रोह था, परन्तु इसमें अवध के तमाम राजे-महाराजे और ताल्लुकेदार भी परोक्ष रुप से सम्मिलित थे, जिन्होंने कभी सुनहरे दिन बिताये थे और जिन्हें अपनी रियासतों के ब्रिटिश साम्राज्य में विलय हो जाने का भय था, परन्तु जिनके सपने अभी भी रंगीन थे, और जो सोचते थे कि इन आन्दोलकारियों का साथ देकर सम्भवतः वे पुरानी प्रतिष्ठा पुनः प्राप्त कर सकेंगें. यही कारण था कि विद्वानों ने अवध के सन् १८५७ के आन्दोलन को ताल्लुकेदारों का विद्रोह भी कहा है. यह बात और है कि ये राजे आन्दोलनकारियों का परोक्ष रुप से साथ देने के साथ ही ब्रिटिश दरबार में भी वफादारी की कसमें खाते रहे और इस बात की प्रतीक्षा करते रहे कि ऊँट किस करवट बैठता है.

अवध की पुरानी राजधानी फैजाबाद के विषय में हैकिन्सन लिखते हैं कि फैजाबाद अन्त तक एक वफादार शहर बना रहा जब तक कि क्रान्तिकारियों ने तलवारें हाथ में लेकर यहाँ की गलियों में यह घोषणा नहीं कर दी कि तुम स्वतंत्र हो. ऐसे समय जहाँ एक मौलवी क्रान्ति का पैगाम लेकर सम्भवतः मद्रास से फरवरी १८५७ में यहाँ आये इनका नाम सिकन्दर शाह था जो बाद में फैजाबाद के मौलवी के नाम से जाने गये.

ब्रिटिश इतिहासकार मौलिसन के शब्दों में यदि देश भक्त उस भक्ति को कहा जाता है जो बिना किसी स्वार्थ या शत्रु मित्र का ध्यान किए केवल इसलिए लड़ता है कि उसकी जन्मभूमि पर किसी और का अधिकार क्यों है? तो मौलवी निःसन्देह सच्चे देशभक्त थे जो समान से ऊँचे आदर्शो के लिए लड़े. यह मौलवी अपने स्वयंसेवकों को शासन कैसे सह सकता था. अतः १६ फरवरी को लेफ्टीनेंट थरर्बन, कोतवाल और सिपाहियों के साथ फैजाबाद की उस सराय में पहुँचे, जहाँ मौलवी कुछ आन्दोनकारियों के साथ टिके हुये थे. मौलवी साहब से हथियार डाल देने को कहा गया परन्तु उन्होंने मना कर दिया क्योंकि ये हथियार उन्हें अपने परिवार की तरफ से स्वतंत्रता के धार्मिक कार्य के लिए दिये गये थे. लेफ्टीनेंट साहब के सारे प्रयास निरर्थक हो जाने पर फोरबिस जो उस समय अवध के दौरे पर थे. १७ फरवरी को मौलवी साहब के पास पहुँचे और उनसे वादा किया कि यदि वे अपने साथियों के साथ शरण में आ जावें तो उनके साथ विशिष्ट व्यवहार किया जायेगा परन्तु क्योंकि उन्होंने अव्यवस्था फैलाई है अतः उन्हें दण्ड भुगतना होगा परन्तु वे साधारण जेलों में नहीं रखे जायेंगें. इस प्रयास के भी विफल हो जाने पर उन पर अचानक रात्रि में आक्रमण किया गया परन्तु इस अवस्था में भी वह बहादुर सिपाही और उनके साथी शहीदों के तरह लड़े. लेफ्टीनेंट थामस बुरी तरह घायल हुये. मौलवी साहब बचा लिये गये परन्तु ४ साथी पकड़े गये, ३ मारे गये और ५ घायल हुये. हैकिन्स लिखते हैं कि इतना सब हो जाने पर भी फैजाबाद के ताल्लुकेदारों में बॅटी जनता को इन आन्दोलनों से कुछ खास सरोकार नहीं था, परन्तु मेरठ और दिल्ली में भड़कती आग की ज्वाला यहाँ तक भी पहुँची और ८ जून १८५७ में जिहाद छेड़ दिया. मौलवी नेता चुने गए परन्तु सदैव की भाँति इस बार भी फैजाबाद की क्रान्ति को इस बहादुर सिपाही का नेतृत्व अधिक समय तक न मिल सका और वे शाहगंज के महाराजा मानसिंह को बागडोर सौप अवध दरवार के तहत बेगम हज़रत महल के साथ कम करने लखनऊ आ गये.

छत पर सब्जी लगायें

स्वास्थ्य के लिए हरी सब्जी का प्रयोग बहुत लाभप्रद होता है. हरी सब्जी गृह वाटिका में जमीन के अलावा छत और बारजे में गमले, आदि में आसानी से उगाये जा सकते है. उक्त जानकारी देते हुए पर्यावरण संरक्षण समिति के सचिव एवं पेड़ पौधा समाचार के सम्पादक अरुण कुमार अग्रवाल ने बताया कि छत के चारों कोने में बड़े कनस्तर या टब में विभिन्न सब्जियों के पौधे आसानी से लगाये जा सकते है. पौधे लगाने से पहले 40 प्रतिशत मिट्टी, 20 प्रतिशत बालू और 40 प्रतिशत कम्पोस्ट खाद और चुटकी भर कीटनाशक मिलाकर अच्छी तरह से मिक्चर बना ले और सब्जी के पौधे लगा दें.

साहस

सत्यवान नायक, भिलाई, छ.ग.

मॉ, मुझे आखिर कब तक दिखाती रहोगी. मुझे यूॅ बार-बार तैयार होकर उनके उटपटांग सवालों का जवाब देना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता."
"क्या करें बेटी, दिखायेंगे नहीं तो विवाह कैसे होगा." मॉ ने समझाया.
"इतने बार तो दिखा चुकी हो. कितना खर्च कर चुके है बाबूजी और क्यों परेशान होती हो. क्या सिर्फ शादी ही मंजिल है."

स्मिता के पिता बाबू रामदयाल आज ऑफिस से कुछ पहले ही घर लौट आये थे. उन्होंने आते ही स्मिता के मॉ को चिल्लाते हुए पुकारा-'कमला जरा जल्दी सुनो'

"क्यों चिल्ला रहे हो. क्या हुआ आज जल्दी क्यों चले आये." पत्नी ने कुछ चिड़चिड़ाते हुए कहा.

उन्होंने कुछ उतावले होते हुए कहा-"अरे भाग्यवान अब चिड़चिड़ाना छोड़ो और तैयारी करो. आज हमारी स्मिता को देखने लड़का और उसके माता-पिता आने वाले है. बहुत अच्छा खानदान है. लड़का बैंक में क्लर्क है. और सबसे बड़ी बात है कि उन्हें दहेज में कुछ नहीं चाहिए. सिर्फ लड़की पसंद आनी चाहिए."

पत्नी ने कुछ चिड़कर कहा-"पहले पहल सभी कहते है दहेज में कुछ नहीं चाहिये, परन्तु बाद में लोगों का असली चेहरा सामने आता है. मैं बहुत अच्छे से जानती हूँ ऐसे सज्जनों को."

"अच्छा अब ये बहस छोड़ो. तुम जाकर स्मिता को तैयार करवाओ. मैं जरा बाजार से मिठाई वगैरह लेकर आता हूँ. जरा झोला देना." बाबू रामदयाल झोला लेकर मार्केट की ओर चल दिये.

"स्मिता बेटी जरा सुन तो." मॉ की आवाज सुनकर स्मिता बाहर आई.

"बेटी जरा तुम तैयार हो जाओ. कुछ लोग देखने आ रहे है. हॉ साथ में हल्का सा मेकअप भी कर लेना." मॉ ने स्मिता को निर्देश देकर सोफा ठीक करने लगी. मॉ की बात सुनकर स्मिता ने कुछ खिन्न होते हुए कहा-"मॉ, मुझे आखिर कब तक दिखाती रहोगी. मुझे यूॅ बार-बार तैयार होकर उनके उटपटांग सवालों का जवाब देना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता."

"क्या करें बेटी, दिखायेंगे नहीं तो विवाह कैसे होगा." मॉ ने समझाया.

"इतने बार तो दिखा चुकी हो. कितना खर्च कर चुके है बाबूजी और क्यों परेशान होती हो. क्या सिर्फ शादी ही मंजिल है." स्मिता ने थोड़ी बहस करने के अंदाज में कहा.

"ये बहस छोड़ों. जाकर जल्दी तैयार हो. बाबूजी मार्केट से लौटते होगें." मॉ ने कहा.

स्मिता कुछ अनमने ढंग से तैयार होने चली गई.

स्मिता एक सुंदर, आकर्षक नयननक्श वाली सांवली लड़की है. एम.ए. करने के साथ ही उम्र बीतते उसने सिलाई कढ़ाई, पेंटिग और कम्प्यूटर्स के न जाने कितने ही छोटे मोटे कोर्स पूरे कर चुकी थी.

यौवन की दहलीज पर माता पिता को उसके शादी की चिन्ता सताने लगी है. धीरे-धीरे पचीस बरस भी पूरे होने को आये. इस बीच मॉ बाप ने शादी के लिए प्रयास तेज कर दिये. वे शीघ्र ही लड़की का बोझ हल्का कर देना चाहते थे. दुनिया की रीत और किस्मत के खेल ने अब तक उसका कहीं मेल नहीं करा सका. हर बार लड़के वाले आते, देखते, जाकर जवाब देने की बात कहकर चले जाते. परन्तु विडम्बना यह है कि आज तक कोई जवाब नहीं आया. आज फिर सज संवरकर अपनी नुमाईश करनी थी.

स्मिता की मॉ घर व्यवस्थित करने लगी. बाबू रामदयाल मिठाई आदि लेकर वापस आ चुके थे. सब तैयारियॉ पूरी हो चुकी थी. अब सिर्फ लड़के वालों का इंतजार था.

धीरे-धीरे शाम से रात होने आयी परन्तु लड़के वालों का पता नहीं. बाबू रामदयाल बार-बार बाहर सड़क पर जाकर देख आते. उनकी अधीरता बढ़ती जा रही थी. तभी दूर से एक आटो आता दिखाई दिया. वह भी उनके घर पास आकर धीर होने लगा. तभी बाबूजी ने आवाज लगाई.

"अरे सुनो, लगता है लड़के वाले आ रहे है. जरा ठीक ठाक कर लो."

घर में छायी मायूसी में जैसे जान आ गई. पुनः हरकत शुरु हो गई. ऑटो बाबूजी के पास आकर रुकी. आटो वाले ने एक पुर्जा निकाल कर दिखाया. वह डाक्टर तिवारी का पता पूछ कर आगे बढ़ गया. बेचारे बाबूजी फिर मायूस हो गये. खुद ही बड़बड़ाने लगे-"पता नहीं क्या हो गया. अब तक आये नहीं." रात हो गई परन्तु वे नहीं आये.

दूसरे दिन खबर आई कि किसी कारण वश कल नहीं आ पाये. आज आयेंगे. वो भी सुबह ११ बजे. बाबूजी रामदयाल ने आधे दिन की छुट्टी ले ली. लड़के वाले ठीक ११.३० बजे आकर पहुंच

गये. आवभगत के बाद स्मिता चाय लेकर आयी. "बैठो बेटी."

पढ़ाई लिखाई जैसे औपचारिक प्रश्नों के बाद. लड़के के दोस्त ने प्रश्न किया-"हमने सुना है इससे पहले भी कई लोग आपको देख चुके हैं. फिर आपकी शादी क्यों नही हुई. आखिर कुछ तो कारण रहे होंगे, इनकार करने का. कहीं कुछ....."

इस अप्रत्याशित प्रश्न से सभी भौचक्के होकर एक दूसरे को देखने लगे. लड़के की मॉ ने तभी कहा-"कहीं कोई ऐसी वैसी बात तो नहीं. जो आप लोग हमसे छिपा रहे हैं."

अब स्मिता से रहा नहीं गया. वह बोली-"जी हॉ, आपसे पहले भी कई लड़के मुझे देख चुके है. सभीा का पता हमारे पास है. आप सभी के घर जाकर एक-एक से पूछ लें उन्होंने क्यों इनकार किया. तसल्ली होने के बाद आइएगा."

स्मिता ने इन वाक्यों को कुछ इस तरह व्यंग्यात्मक ढंग से कहा कि सभी उसे देखते रह गये. लड़के वाले स्मिता के जवाब से रुष्ट होकर चले गये. जाते-जाते लड़के ने बाबूजी से कहा भी-"रुप न रंग फिर उस पर इतना घमंड. लड़की वो भी इतनी मुंहफट. इससे कौन शादी करेगा." रामदयाल जी लड़के वालों से क्षमा मांगते हुए समझाते रहे. परन्तु वे चले गये.

रामदयाल जी अन्दर आकर स्मिता से कुछ गुस्से से बोले-"स्मिता ये क्या बदतमीजी है. आखिर वे लड़के वाले है. तुम्हें ऐसा नहीं बोलना चाहिए था. बड़ी मुश्किल से तो लड़के मिलते है और तुमने...."

"बाबूजी, उन्होंने मेरे चरित्र पर प्रश्न उठाया था. हमारे परिवार के इज्जत पर अंगुली उठाई थी. आखिर क्यों, इसे मैं चुपचाप सहन कर लूँ." स्मिता ने अपनी सफाई पेश की.

इस तरह समय बीतता गया. कई जगहों से लोग आते देखते और चले जाते. कहीं दहेज के लिये, तो कहीं उसके सावलेपन पर बात अटक जाती. किसी को दहेज नहीं चाहिए परन्तु नौकरी वाली लड़की चाहिए, जिससे ताउम्र दहेज बटोर सके. किसी को उसके अधिक पढ़े लिखे होने पर आपत्ति थी. इस तरह स्मिता को हमेशा नकारात्मक उत्तर ही मिलते रहे. अब तक कितने ही इनकारों की साक्षी बन चुकी थी.

धीरे-धीरे उसके शादी के सपनों का उत्साह समाप्त होने लगा था. बार-बार तैयार होकर अपनी नुमाईश लगवाना, और लड़के वालों के इनकार सुन सुन कर थक चुकी थी.

धीरे-धीरे उसके शादी के सपनों का उत्साह समाप्त होने लगा था. बार-बार तैयार होकर अपनी नुमाईश लगवाना, और लड़के वालों के इनकार सुन सुन कर थक चुकी थी.

इन इनकारों से उसका मन हर बार आहत् होता. हर बार सोचती की अगली बार तैयार नहीं होगी. परन्तु अपने माता पिता के अनुरोध और परेशानियों को देखते हुए, वह हर बार तैयार हो जाती.

आखिर इतने कोशिशों के बाद वह दिन भी आया जब स्मिता को लड़के के माता पिता ने पसंद किया. लड़का डॉक्टर था. अभी अभी ईंर्टनशिप करके निकला था. अभी कहीं सर्विस या प्रेक्टिस शुरु नहीं कर पाया था.

लड़के की माताजी ने बातचीत को आगे बढ़ाते हुये कहा-"बहन जी हमें लड़की तो पसंद है. अब जरा हमें लोकमर्यादाओं की बात भी कर लेनी चाहिए." लोकमर्यादाओं के नाम पर उन्होंने २ लाख रुपये, हीरो होण्डा, कलर टी.वी., फ्रिज, फर्नीचर, गहनें आदि की मांग रख दी. इसके अलावा जो कुछ आप अपनी लड़की को देना चाहें. इतना सुनते ही रामदयाल कुछ सोच में पड़ गये. वे कुछ संकोच करते हुए बोले-"बहन जी अगर कुछ कम हो जाता तो अच्छा होता."

"भाई साहब, लड़का हमारा डॉक्टर है. उसका भी अपना स्टेट्स है. वैसे हमें कुछ नहीं चाहिए पर क्या करें लोक लाज का ख्याल तो रखना पड़ता है. समाज के लोग क्या कहेंगे. हमारे

हँसते-रोते

आसमान में तारे
आज भी टिमटिमाते है
हम ऑगन में नहीं,
बन्द कमरे में सोते है।
तारे कब उगे
कब डूबे?
हमें क्या पता,
हम बाहर चहकते हैं
अन्दर महकते है।
खुले आसमान के नीचे
कौन सोता है?
सबको पता है
कब क्या होता है?
गॉव के बाहर
पंपिगसेट पर वह सोया था
सिसकियां भी न ले पाया
प्राण खोया था।
धरती पर पेड़ आज भी खड़े है
दरवाजे के सामने
हम नहीं सोते।
झुलस जाती है शरीर
मकान के अन्दर
हम उपर से हँसते
अन्दर से रोतें
हम बिता देते है जीवन
हँसते रोते
रोते-हँसते
रीत जाता है जीवन
रोते-हँसते
हँसते-रोते।

सूर्यबली सिंह, आजमगढ़, उ.प्र.

बड़े लड़के की शादी पर ६० हजार नगद व गाड़ी अलग से मिला था. जबकि वह सिर्फ सरकारी ऑडिटर है अब ये ठहरा डाक्टर, यह उसके मान सम्मान का प्रश्न है. इसमें हम कुछ नहीं कर सकते." लड़के के मातापिता ने अपनी सफाई पेश की.

बाबू रामदयाल कुछ सोचते हुये बोले "ठीक है हमें मंजूर है. आपकी ओर मैं बात पक्की समझूं. वैसे लड़के को दिखा देते तो अच्छा रहता. ऐसा न हो आगे कोई बात हो."

"देखिये रामदयाल जी हमारे यहाँ ऐसे संस्कार है कि बच्चे मां बाप की बातों से परे नहीं चलते. हमने बात पक्की कर दी, तो पक्की समझिये." उन्होंने रामदयाल जी को आश्वस्त किया.

"फिर भी अगर लड़का देख लेता तो ठीक रहता." रामदयाल जी ने कुछ जोर देते हुए कहा.

"ठीक है परसों शाम को लड़का देखने आ जायेगा. परन्तु आप शादी की तैयारी करें. जून के तीसरे सप्ताह में पडित जी से पूछकर तारीख तय कर लेगें. हॉ, बारात के मान सम्मान और लेन देन में कमी नहीं होनी चाहिए. और कैश तिलक में भेज दीजिएगा." इतना कहकर वे चल दिये.

आज रामदयाल जी खुश होते हुये भी उनके माथे पर चिन्ताओं की लकीरें खींच आई थी. आखिर इतने बड़े रकम के जुगाड़ करने की जिम्मेदारी भी अकेले उन पर ही तो है.

शाम को रामदयाल जी पत्नी के संग बैठ शादी के खर्चे का हिसाब लगाने लगे. कुल ४-५ लाख रुपये का खर्च आयेगा. प्राविडेंट फंड और सारी बचत मिलाकर ३ लाख ही हो रहे थे. अभी भी और २ लाख का जुगाड़ करना शेष था. पूरा हिसाब लगाने के पश्चात् दोनों और चिन्तित दिखाई देने लगे. तभी पत्नी ने कहा-"सुनिये ना, क्यों न लड़के से कुछ दहेज कम करने की बात करके देख ले. आजकल के पढ़े लिखे लड़के है. हमारी मजबूरी को समझ सकते है. शायद मान जाये. कल जरा कोशिश करके देखियेगा."

"ठीक है देखूंगा. वैसे उम्मीद कम है"

आज लड़का आने वाला था. एक तरह से शादी पक्की मान चुके थे. इसलिये उनके आवभगत में कोई कमी नहीं रखना चाहते थे. इसलिये काफी कुछ खर्च किया था. आखिर ने कुछ इधर-उधर के प्रश्न करने के बाद स्मिता को जाने को कहा और फिर रामदयाल जी की ओर मुखातिब होकर बोले-"देखिये, जब मेरे माता पिता ने पसंद की है तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है. मुझे लड़की पसंद है. हॉ बारात में मेरे दोस्तों का पूरा ख्याल रखियेगा."

"बेटे आप से एक गुजारिश है. अगर दहेज में कुछ कमी हो जाती तो मुझे कुछ सहूलियत हो जाती." रामदयाल जी ने अनुरोध करते हुए. इतना सुनते ही लड़के के दोस्त ने कहा-अच्छा हुआ आप याद दिला दियें.

"देखिये इस संबंध में हमें कुछ कहना था वैसे भी मेरा दोस्त डॉक्टर है. डॉक्टर है तो अपना नर्सिंग होम तो खोलेगा ही. इसमें भी आपको मदद करनी पड़ेगी. वैसे जो कुछ भी आप करेंगे अपनी लड़की के लिए ही करेंगें. इसमें दहेज का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता. वैसे भी आजकल डॉक्टर दामाद पाने के लिए लोग क्या-क्या नहीं करते. वो तो अंकल-ऑटी है जो इतने कम में मान गये वर्ना हमें देने वालों की कमी थोड़ी ही थी. खैर छोड़िये. इस संबंध में हम कुछ नहीं कर सकते." लड़के के संग आये दोस्त ने यह कहकर दहेज कम करने के अनुरोध को सीधे ठुकरा दिया.

लड़के ने उठते हुये कहा-'मुझे रिश्ता मंजूर है. अब हम चलते है.'

तभी स्मिता बैठक में आयी और बोली-"जरा रुकिये, एक मिनट बैठिए." लड़का और उसका मित्र ठिठक कर रुक गये.

स्मिता ने लड़के की ओर देखते हुए कहा-'मुझे ये रिश्ता मंजूर नही है. दो लाख नगद, गाड़ी, टी.वी., फ्रिज, गहने आदि मॉगने के बाद आपके माता पिता शायद नर्सिंग होम के खर्चे की बात भूल गये थे. उसे आप

> स्मिता फूट पड़ी और रोते हुए बोली-"हॉ, मै पागल हो गई हूॅ. मैं दस बार इन लड़कों से ठुकराई गई हूॅ. कभी लड़के से ज्यादा पढ़ी लिखी होने के कारण, कभी सांवली होने के कारण, कभी दहेज के कारण, कभी मेकअप किया तो लोगों ने फैशनेबुल कहकर ठुकराया, कभी मेरे सिम्पल रहने के कारण ठुकराया. आखिर इन सब में मेरा क्या दोष है मॉ. मैं भी इंसान हूॅ मॉ"

विंडो शापिंग

मुझे इस बड़े बाजार में
निरुदेश्य भटकना नहीं है,
सस्ती बिक्रियां नहीं ढूढते फिरना।
केवल खिड़की से
वस्तुओं को देखना नहीं है।
खोजना नहीं है कुछ।
जान गया हूं
कौन सी वस्तु
किस दुकान से,
कितने दामों,
कितने बट्टे संग,
खरीदनी है
और उससे अपने घर को
सजाना है, चलाना है

अशोक खन्ना 'अशोक', दिल्ली

लोगों ने पूरी कर दी. मैं ऐसे सभी लड़को को नापसंद करती हूँ जो दहेज की घोड़ी पर सवार होकर ससुराल आना चाहते है. मुझे शादी नहीं करनी. मैं इस विवाह से इनकार करती हूँ. अब आप जा सकते है.

इतना सुनते ही बाबू रामदयाल और स्मिता की मॉ हतप्रभ होकर स्मिता को देखने लगे. लड़का जा चुका था. स्मिता इनकार करके सीधे अपने कमरे में चली गई.

बाबू रामदयाल और उसकी पत्नी दोनों स्मिता के कमरे में पहुचे. स्मिता चुपचाप बैठी थी. उसकी मॉ ने पूछा-'बेटी इतने दिनों बाद एक अच्छा रिश्ता मिला था, उसे तूने क्यों ठूकरा दिया. तुझे क्या हो गया है. तू पागल हो गई है क्या? दहेज तो हमें जुगाड़ करना था तुझे इसके लिये इतनी चिंता दिखाने की क्या जरुरत थी.'

स्मिता फूट पड़ी और रोते हुए बोली-"हॉ, मै पागल हो गई हूँ. मैं दस बार इन लड़कों से ठुकराई गई हूँ. कभी लड़के से ज्यादा पढ़ी लिखी होने के कारण, कभी सांवली होने के कारण, कभी दहेज के कारण, कभी मेकअप किया तो लोगों ने फैशनेबुल कहकर ठुकराया, कभी मेरे सिम्पल रहने के कारण ठुकराया. आखिर इन सब में मेरा क्या दोष है मॉ. मैं भी इंसान हूँ मॉ. मेरी भी आत्मा है. कितने इनकारों को सहूंगी. हर बार पुरुष समाज के अहमों के शिकार होती रही. आखिर क्यों?"

"देख बेटी, इतने दिनों बाद तुझे किसी ने पसंद किया था. तूने इनकार करके अच्छा नहीं किया. ये बात अगर फैल गई की लड़की ने इनकार कर दिया तो तेरी शादी कहीं भी नहीं हो पायेगी. " मॉ ने समझाते हुऐ कहा.

"उन्होंने मुझे नहीं मेरे पिता से मिलने वाले दहेज को पसंद किया था. उन्हें लड़की नहीं सिर्फ दहेज चाहिये. मैं भी आपकी बेटी हूँ. आपकी हैसियत से वाकिफ हूँ. पिताजी के आंखों की चिंता को पढ़ सकती हूँ. आपकी मजबूरी को समझ सकती हूँ मैं. क्या लड़की कि नियती सिर्फ शादी है. आप जितना पैसा दहेज में देगे, उसका एक चौथाई हिस्सा भी मुझे दे देंगे तो मैं अपने पैरों पर खड़ी हो सकती हूँ. दहेज लेकर दूसरे के घर की शोभा बनने के बजाय मुझे अपने घर का सहारा बनना ज्यादा पसंद है." स्मिता पूरे आत्मविश्वास के साथ अपनी बात कह गई.

"नहीं बेटी, मैं तेरे अन्दर की पीड़ा समझ सकती हूँ. तेरे इनकार में छिपे हुए दुख को समझती हूँ. परन्तु शादी लड़की का यथार्थ है." मॉ ने शादी पर कुछ ज्यादा जोर देते हुए कहा.

"नहीं, मॉ, मैं आज दुखी नही हूँ. ये आंसू पिताजी और आपके प्रयास को असफल करने के कारण निकले है न कि रिश्ता टूट जाने के कारण." स्मिता ने निकले आंसू की सफाई दी.

फिर थोड़ा रुककर आंसू पोंछते हुये बोली-"आज तक मुझे लड़को ने ठुकराया था. आज इतने दिनों बाद मैंने किसी दहेज लोभी लड़के को ठुकराया है. इस इनकार से मेरी आहत आत्मा को जो सुख मिला है, उस सुख के सहारे मै आजीवन कुंआरी रह लूंगी. मैं बहुत कुछ सोचने व समझने के बाद ही इन दहेज लोभी लड़कों को ठुकराने की हिम्मत जुटा पाई हूँ. इस इनकार के सुख ने मेरी आहत् जिन्दगी में एक नया उत्साह जगाया है. फिर किसी लड़के को दिखाकर मुझसे मेरे इस सुख को मत छीनना मॉ."

फिर वह बाबूजी की ओर मुड़ कर बोली-"बाबूजी, मुझे माफ कर दें. मैंने आपके दिल को दुखाया है. बाबूजी मेरे दहेज की खातिर आप सब कुछ बेच देगें और सारी जिन्दगी कर्ज चुकाते गुजर जायेगी. आज आप उनकी मॉग पूरी भी कर दें तो वे कल और नहीं मॉगेगें इसकी क्या गारंटी है बाबूजी. मुझे जन्म देने का दण्ड आप को मिले यह मुझे मंजूर नही है. बाबूजी मैं टेलरिंग और पेंटिग क्लास खोलने जा रही हूँ. हो सके तो मेरी कुछ मदद कर दीजिये बाबूजी. शायद आपकी ये इकलौती बेटी, आपके बेटा न होने के गम को कम कर सके. बाबूजी मैं अपने पैरों पर खड़े होकर तमाम जिंदगी इस इनकार के सुख के एहसास से खुशी-खुशी जी लूंगी. आज पहली बार मैं इतना खुश हूँ बाबूजी. मुझे नये काम के लिये आशीर्वाद दीजिये बाबूजी. स्मिता ने झुककर अपने पिता के पैर छुये. बाबू रामदयाल ने बेटी के सर पर हांथ रख दिये. बाबू रामदयाल के गुस्सों का बादल बेटी के साहस से टकराकर स्नेह और ममता की बारिश कर रहे थे. उनके ऑखों से बहते ऑसू स्मिता को आशीर्वाद दे रहे थे."

ईश

वेदना के तार को
कैसे मैं टंकार दूँ
कौन है मेरा कौन है साथी
जिसको मैं आवाज दूँ
चारो ओर बीहड़ जंगल है
किसको मैं व्यथा सुना दूँ
सुन-सुन कर जो सिसकी ले ले
उसको मै मर्माहत बना दूँ
कथा है लम्बी, समयाभाव है
कैसे मैं शर चाप चढा दूं
व्यवस्तता के इस जीवन में
कैसे उनको पास बुला लूँ
धर शीश ईश के चरणों में
उनके ही गुहार लगा दूँ
है उनसे बढ़कर कोई नहीं
जिनको मैं टंकार सुना दूं.

संतोष अग्रवाल, दिल्ली

मन चंगा तो कठौती में गंगा
संत रैदास

डॉ० सत्येन्द्र श्रीवास्तव

५ अगस्त १९३५ को उत्तर प्रदेश में जन्में डॉ० सत्येन्द्र श्रीवास्तव की प्रारंभिक शिक्षा वाराणसी, उत्तर प्रदेश में हुई, पी.एच.डी, लंदन विश्वविद्यालय, यू. के. से किया तदोपरान्त टोरोन्टो विश्वविद्यालय-कनाडा, लंदन विश्वविद्यालय-लंदन, सिटी विश्वविद्यालय -लंदन में करीब २५ वर्षो तक अध यापन कार्य किया. अवकाशोपरान्त भारत, थाईलैंड, मलेशिया, केनिया, दक्षिण अफ्रीका, जाम्बिया, रुस, जापान आदि देशों में व्याख्यान और हिंदी एवं अंग्रेजी कविताओं का पाठ किया.आप धर्मयुग- साहित्य वातायन, नवभारत टाईम्स लंदन से, सण्डे मेल, लंदन की चिट्ठी, प्रभात खबर, आउटलुक, नया सेवरा में नियमित स्तम्भ लिखते है. आपकी अब तक जलतरंग, एक किरण का फूल, स्थिर यात्राएं, मिसेज जोन्स और वह गली, सतह की गहराई, कुछ कहता है यह समय-सभी काव्य संग्रह, टेम्स में बहती गंगा की धार (ब्रिटेन में बसे भारतीयों की संघर्ष गाथा-पद्मानंद साहित्य सम्मान से सम्मानित), कंधो पर इन्द्रधनुष-यात्रा डायरी, शहीद उद्यम सिंह, उनका समय, उनकी क्रांति, बेगम समरू, मिस वर्ल्ड अनडिक्लेयर्ड- सभी नाटक कृतियां प्रकाशित हो चुकी है.

डॉ० सत्येन्द्र श्रीवास्तव, लंदन की कुछ रचनाएं

आज स्थिर है ज्वार

आज स्थिर है ज्वार
आंधी का नहीं है डर
दूर उस सीमांत पर
दिखने लगे मस्तूल
मौन तट पर शेष कितने
विगत के पगचिह्न
लहरियों पर अनागत के लिए
अर्पित फूल....

++++++++++++++++++++++

मुक्ति गीत

मुक्त होना चाहता है आज यों मन
अंगूठी भी लग रही है भार बन्धन
बह रही है हवा यद्यपि तेज खुलकर
हर किरण निकली है सद्यः नहा धुलकर
लग रही है प्रकृति बिल्कुल खरी तुलकर
पर अनागत से डरा है कहीं जीवन

मंच सज्जित तख्त सत्तारूढ़ बौने
शक्ति वल्गा अश्व है लेकिन खिलौने
राज्य उनके निजी है जैसे बिछौने
समय मटियाया हुआ है भाल चन्दन

किन्तु अब भी मनुज में कुछ आस्था है
क्योंकि तम के पार अब भी रास्ता है
क्योंकि हर एक को किसी से वास्ता है
इसी से बदलाव के प्रति है समर्पण

वर्षगांठ पर

यदि सब कुछ किसी तरह
रह जाता शेष
ज्यों का त्यों
परिवर्तनों की आशा में
सपनाता हुआ
एक आदर्शलोक के लिए...
यदि जो
अनन्य था अभिन्न था
सटा रहता था वक्ष से प्रतिफल, फिर
लौट आता और
बातें अपने को दोहराती....
यदि जीवन एक बार
फिर जिया जा सकता
एक पारे जैसे स्वप्न के इर्द-गिर्द..
यदि शब्द
अपने को व्यक्त कर पाते
पर्तो में नहीं
रंगो में....
तो
आज मैं भी
एक मोमबत्ती जला देता
जश्न मनाता
इस एक और गुजरते हुए
वर्ष के लिए

+++++++++++++++++++++

चढ़ाव

चुप्पी साधे
एक पहाड़ी जैसे कोई मूर्ति,
मेरी अंगुलियां रेंगती है उस पर
ऊपर बहुत ऊपर तक,
यह उन्नत, कसे, मांसल
उघड़े उरोजों वाली मूर्ति
तब कहने लगती है
कहानियों पर कहानियां

बिना सींग वाले बैल

न देखो मुझे
उन्हीं दृष्टियों से फिर-फिर
बिना सींगवाले बैलों की तरह
जो संभावनाओ के किसी हल में
नहीं जुत सकते अब
अब वे बैल
अग्नि के वृत्तों में
सीधे घुस जाते है
भस्म हो जाने के लिए
अपनी ही खर्च होती शक्ति की
और अपने ही प्रतिशोधों की
दावाग्नि को दहकाते, बढ़ाते
स्मृतियों के हवन कुंडो की
समिधा में
स्वाहा स्वाहा के
मन्त्रोचारणों के साथ
संबंधो के संधिपत्र पर
बनकर हस्ताक्षर

अध्यात्म

देह धर्म और मोक्ष

आज अनैतिक साधनों से येन-केन प्रकारेण अधिक से अधिक धन कमाने की प्रतिस्पर्धा है, वह प्राकृतिक और सामाजिक पर्यावरण को दूषित कर ही रही है, व्यक्ति को आत्मकेन्द्रित, स्वार्थी और लोभी बना रही है. ऐसे ही काम की प्रकलता में मनुष्य अंधा होकर बलात्कार, व्याभिचार आदि की दूषित सरिता में डुबकी लगा रहा है. वह भोगों का गुलाम हो गया है.

जीवन धारण के लिए नैतिक कर्म अनिवार्य होते है. ये कर्म आत्मा को नहीं बॉधते ऐसा गीता में भी कहा गया है. इन कर्मो के सम्पादन के लिए देह में पॉच ज्ञानेन्द्रियॉ और पॉच कर्मेन्द्रियॉ ऐसी होती है. इन्द्रियां मन के इशारे पर चलती हैं. मन और इन्द्रियां दोनों एक प्रकार से अभिन्न है. आंखे सुन्दर वस्तु, दृश्य या नर-नारी को देखना चाहती है, कान मधुर वाणी या संगीत सुनना चाहते है, नासिका सुगन्ध, जिह्वा स्वाद और त्वचा स्पर्श का सुख चाहती है. जिन बातों से मन को सुख मिलता है, इन्द्रियॉ उसकी पूर्ति में सक्रिय रहती है. मन की विशेषता यह है कि वह केवल जीने मात्र से संतुष्ट नहीं होता. उसे उत्तरोत्तर देह-सुख की कामना रहती है. सुख-दुख को लेकर उसमें विकार उत्पन्न होते है. काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर आद ऐसे ही विकार है इनमें से काम को केवल विचार नहीं माना जा सकता. यह प्रत्येक प्राणी में प्राकृतिक होता है और इसी से सृष्टि की परम्परा भी चलती है. यौवनावस्था में पहुँचते ही इसका वेग अत्यंत प्रबल हो जाता है. उस समय पुरुष स्त्री का और स्त्री पुरुष का संसर्ग चाहती है. यदि यह नहीं हो पाता, तो स्वप्न में या अन्य साधन से वे अपनी इच्छा पूरी करते है. स्त्री और पुरुष का संसर्ग अनिवार्य होने के कारण ही विवाह और गृहस्थ आश्रम को मोक्ष की बाधा नहीं माना गया है.

फ्रायड ने तो काम को ही जीवन तत्व बताया है. यह अतिवादी दृष्टिकोण है. इसी दृष्टिकोण के कारण पाश्चात्य देशों में लड़की बारह वर्ष की उम्र से और लड़का पंद्रह वर्ष की उम्र से परस्पर यौन-संबंध बनाने लगते है. वहॉ विवाह की अनिवार्यता नहीं है. अमरीका में त्रेपन प्रतिशत स्त्रियां बिना पति के अकेली रहती है, क्योंकि वे जब चाहे किसी भी पुरुष के साथ संभोग कर सकती है. वास्तव में काम तथा अन्य विकारों का धीरे-धीरे नियंत्रण किया जाना चाहिए. काम का दमन ठीक नहीं, क्योंकि यह अनेक कुण्ठाओं को जन्म देता है. बड़े-बड़े विरागी, सन्यासी, ऋषि और साध ु इसके कारण अपनी साधना से पतित हो जाते हैं. इसलिए काम की संतुष्टि आवश्यक है. परन्तु इसे अन्य उपायों, कला, साहित्य, संगीत, भक्ति, सेवा, परोपकार, समाज, राष्ट्र और मानवता के प्रेम में ढाला जाना चाहिए. आचार्य रजनीश का 'संभोग से समाधि तक' का यही उद्देश्य है. कबीर जैसे संत गृहस्थ थे, उनका एक पुत्र भी था और वे कर्म करते हुए जीविका चलाते रहे. गोस्वामी तुलसीदास अपनी पत्नी रत्नावली से बहुत प्रेम करते थे. उसी की प्रेरणा से उनका मन राम की भक्ति में लीन हो गया. सूफी संत तो किसी लौकिक स्त्री को ही अपने प्रेम का आलम्बन बनाकर उसे अलौकिकता में परिणत कर देते हैं. इस प्रक्रिया में काम का दैहिक और मानसिक योग तो होता ही है. दैहिकता से मुक्त होकर भी काम मानसिक रुप में विद्यमान रहता है. यह मृत्यु तक पीछा नहीं छोड़ता. यही कारण है कि भक्ति में माधुर्य भाव, सखी भाव, पति या पत्नी भाव की उपासना की जाती है. मीरा की पति भाव की भक्ति सच्ची भक्ति थी. कृष्ण का सगुण रुप उनके अवचेतन में उनकी इच्छा तृप्त कर देता था. कबीर जैसे संत भी अपने को राम की दुलहिन मानते थे. उसके विरह की वेदना में काम का विलीनीकरण हो जाता है. अन्य कोई उपाय नहीं है. इसलिए ज्ञान मार्ग की अपेक्षा भक्ति का मार्ग सुगम माना गया है.

देह-धर्म का पालन अवश्य किया जाना चाहिए. परन्तु इसका यह आशय नहीं है कि इन्द्रियों को दावत के लिए खुला छोड़ दिया जाय. मन को नियंत्रित करके इन्द्रियों पर भी संयम होना चाहिए. मन की इच्छाएॅ अनन्त होती है. यह तृष्णा या मृगरीचिका है. मनुष्य इनसे जितना सुख पाने का प्रयत्न करता है, उतना ही उसका दुख बढ़ता जाता है. इसलिए उसे अपनी बुद्धि से स्थितप्रज्ञ होकर करणीय कर्म करना चाहिए. धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चार पुरुषार्थ कहे गये हैं. धर्म आचरण पक्ष है अर्थात् बचपन में आचरण के लिए अच्छे संस्कार होने चाहिए. मनुष्य को नैतिक मूल्यों को ग्रहण करना चाहिए साथ में वह ज्ञान भी जो व्यावहरिक जीवन और समाज तथा राष्ट्र के लिए उपयोगी हो. न्याय और अन्याय, करणीय और अकरणीय कर्मो की पहचान होना चाहिए. तब वह यौवनावस्था में गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करके अर्थात विवाह करके अर्थ और काम की साधना करे. अर्थ की साधना की एक सीमा होनी चाहिए, वह सीमा है-साईं इतना दीजिए जामें कुटुम समाय।

मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय।।

यहॉ साधु का आशय मेहमान से है. आज जो अनैतिक साधनों से भी येन-केन प्रकारेण अधिक से अधिक धन कमाने की प्रतिस्पध र्ाा है, वह प्राकृतिक और सामाजिक पर्यावरण को दूषित कर ही रही है, व्यक्ति को आत्मकेन्द्रित, स्वार्थी और लोभी बना रही है. इसी प्रकार काम की प्रकलता में मनुष्य अंधा होकर बलात्कार, व्याभिचार, अतिचार आदि की दूषित सरिता में डुबकी लगा रहा है. वह भोगों का गुलाम बन गया है. काम तृप्ति के विविध बाजार खुल गये है. स्त्रियां अपनी देह बेच रही हैं और वेश्यावृत्ति कर रही हैं. यह एक भारी तृष्णा है. अपने भोग के लिए सभी कार्य अकरणीय है. इसलिए ईश्वोपनिषद में 'त्येन त्यक्तेव भुंजरियाः' उक्ति कही गयी है. वास्तव में मनुष्य को अपने और कुटुम्ब के पालन-पोषण एवं सबके स्वतंत्र व्यक्तित्व के विकास के लिए अनिवार्य सुविधाएॅ चाहिए. धनी और गरीब की गहरी खाई पटनी चाहिए. एक

कोई जब तुम्हारा ह्दय तोड़ दे

किशोरावस्था जीवन का सबसे महत्वपूर्ण और संवेदनशील अवस्था होती है. इस अवस्था में युवक-युवतियों को जीवन के कई खट्टे-मीठे अनुभवों का स्वाद चखन पड़ता है. उनमें सबसे महत्वपूर्ण प्रेम संबंध है. युवावस्था में प्रेम हो जाना स्वभाविक होता है. लेकिन कई बार यह मुकाम पाने से पहले ही टूट जाता है. युवकों को अपनी प्रेमिका की बेवफाई का दुख झेलना पड़ता है तो युवतियों को अपने प्रेमी का.

ऐसी स्थिति में अक्सर किशोर-किशोरियां ऐसे फैसले कर लेते है जो उनकी गमगीन जिंदगी को और भी झकझोर देते हैं. यह घटना सबसे ज्यादा उनके कैरियर को प्रभावित करती है क्योंकि इस घटना के बाद न तो वो पढ़ने-लिखने में मन लगाते है और न ही दूसरे कामों में. लेकिन आप कुछ बातों पर गंभीरता से सोच-विचार कर ले तो उस स्थिति से आसानी से छुटकारा मिल सकता है.

ऐसे में सर्वप्रथम मन को शांत करके स्थिति का विश्लेषण करें. ईमानदारी से सोचें कि आप ने वास्तव में खोया क्या है? आपने एक अदद प्रेम-प्रेमिका खोया है. या उससे जुड़ी किसी उपलब्धि ा से हाथ धोया है. इस पर भी गौर करें कि इसे आप अपनी प्रतिष्ठा से तो नहीं जोड़ रहे है क्योंकि बहुत से लब अफेयर्स केवल इसलिए शुरु होते हैं कि वे दुनिया को दिखाना चाहते हैं कि उनके पास भी एक अदद प्रेमी है, प्रेमिका है. इसकी शुरुआत अकसर बायफ्रेंड, गर्लफ्रेंड बनाने के फैशन से शुरु होती है. इसी शान और प्रतिष्ठा के लिए बनायें गये प्रेम संबंध से कोई नाता तोड़ लेता है तो दूसरे की

प्रतिष्ठा को धक्का लगता है.

प्रेमी या प्रेमिका द्वारा संबंध तोड़ लेने पर युवक-युवतियों को एक और नुकसान भी हो सकता है. इसे हम आत्मविश्वास या आत्मसम्मान की हानि भी कह सकते है. क्योंकि कई युवक-युवतियां अपनी खूबियों को अपने प्रेमी-प्रेमिका के माध्यम से ही देख पाते है. एक अदद प्रेमिका और प्रेमी का होना दुनिया के लिए और खुद उनके लिए इस बात का सबूत है कि वे खूबसूरत, स्मार्ट और प्यार के काबिल है. ऐसे में प्रेमिका और प्रेमी को खो देना युवक-युवतियों के लिए भारी पड़ता है. इसके और दूसरे कारण भी सकते है. उसमें सबसे महत्वपूर्ण होता है एक हमराज खो देना. जिससे आप अपनी प्राइवेसी शेयर करते है प्रेमिका या प्रेमी को खो देने पर युवक-युवतियां अपने को नितांत अकेला समझने लगते हैं. अपने प्रिय से अलग हो जाने पर एक और कमी युवक-युवतियों को बुरी तरह झकझोर देती है वह है विपरित लिंग का आकर्षण. प्रेमी प्रेमिका खोने का शौक युवक-युवतियां कुछ उसी तरह मनाते है जैसे मृत व्यक्ति के लिए मनायाज जाता है. इस स्थिति में उबरने में काफी समय लग जाता है लेकिन कुछ बात पर खता खाए, युवक-युवतियां गौर करें तो जल्द ही उस शोक से निजात पा सकते है. प्रेमी-प्रेमिका को खो देने के गम में डूबे रहने से अच्छा है कि यह सोचें कि अच्छा हुआ जो जल्दी वस्तुस्थिति सामने आ गई. वहीं नए-नए लोगों से मिलना जुलन तो लगभग हर स्थिति से उबरने में मदद करता है. अपनी कल्पना की उड़ान पर भी काबू रखें. संभव हो तो अपने दुख का कारण परिवार वालों को बताएं, ताकि वह आपकी मदद कर सकें. अपने प्रेमी प्रेमिका के बारे में दोस्तों के सामने जमकर भड़ास निकालें. इससे आपके दोस्त जख्मों पर मरहम लगाएंगे जिससे अपने बेवका प्रेमी, प्रेमिका के लिए आपके मन में अंदर ही अंदर उबल रहा सैलाव निकल आयेगा.

+++++++++++++++++++++

दूसरे के शोषण की प्रक्रिया खत्म होनी चाहिए. करणीय कर्म यही है कि मनुष्य अपने स्वभाव, शक्ति एवं सामर्थ्य के अनुसार समाज, राष्ट्र और मानवता के हितकारी कार्य करें. अन्याय, अत्याचार, शोषण आदि का उन्मूलन करके सारे समाज और विश्व में समरसता उत्पन्न करने के कार्यो में अपने को समर्पित कर दे. गीता के कर्म योग का यही तात्पर्य है. यही मनुष्य की मोक्ष का सबसे सीधा मार्ग है. इसमें मनुष्य अपने 'अहं' या 'मैं' से परे होकर (सत्व, रज और तम) स्व का सम्पूर्ण सृष्टि में विस्तार करता है और अंत में उसी (ब्रह्म) में लय हो जाता है. क्योंकि ब्रह्म सर्वव्यापी है, सबमें उसका वास है, इसलिए व्यष्टि की समष्टि में लीनता ही मोक्ष है. इसमें देह-धर्म बाधक नहीं, क्योंकि देह से ही आत्मा अपना अस्तित्व पाती है और उस आत्मा का साक्षात्कार उदात्त और संवेदनशील बनकर ही हो सकता है. इसलिए गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है-परहित सरिस धरम नहिं भाई।परपीड़ा सम नहिं अधमाई।।

परपीड़को की अधमता के विनाश के लिए प्रयत्नशील होना मोक्ष की ओर जाना है.

लिफ्ट

✍डॉ0 महावीर सिंह, रायबरेली, उ.प्र.

शहर की व्यस्त सड़क. रमिया अपने बीमार बच्चे को सड़क किनारे लिटाये खड़ी है. दसियों गाड़िया आ जा रही है. वह हर आती गाड़ी को हाथ देती है, कोई तेजी से आगे बढ़ जाता है, कोई गति धीमी कर, तेजी से आगे बढ़ जाता है, कोई रुक कर बिना देखे सुने आगे बढ़ जाता है.

सामने से आती जीप को रमिया हाथ देती है. जीप रुकती है, वह हाथ जोड़कर, दीन-स्वर में घिघियाती है-‘ बाबू साहब, बच्चा बहुत बीमार है, कोई सवारी नहीं मिल रही है, आगे कस्बे तक लेते चले, बड़ी कृपा होगी, अस्पताल के पास उतर लूंगी, मेरा लाल बच जायेगा...’

‘चल हट, तेरे बच्चे के लिए जीप है. .. कोई एम्बुलेंस है...’ जीप के अंदर से पुरुष स्वर गूंजा, और जीप झटके से आगे बढ़ गई. कुछ मीटर की दूरी पर पोल के पास खड़ी युवती मुस्कान बिखेरती पर्स झुलाती आगे बढ़ती है और हाथ उठाती, नयन नचाती कूकती है-‘लिफ्ट प्लीज.’

कार रुकती है, दरवाजा खुलता है, आधुनिका जीप में अन्दर समा जाती है. गाड़ी फर्राते के साथ दौड़ पड़ती है. रमिया आह भर कर देखती रह जाती है और आते हुए तॉगे को हाथ देने के लिए आगे बढ़ जाती है.

मेरी शादी में तुम शामिल नहीं हुए

राम ने मोहन को कहा, ‘यार तुमने मुसीबत के समय मेरा साथ नहीं दिया?

मोहन-‘वो कैसे?’

राम-मेरी शादी में तुम शामिल नहीं हुए.

दमनजीत सिंह, मोहली

उत्सव

✍सत्यवान नायक, भिलाइ, छग

वृद्धाश्रम से खबर आई है कि साहब के पिता का देहांत हो गया है. ऑफिस के कई लोगों की खबर सुनकर आश्चर्य हुआ. आश्चर्य इसलिये नहीं कि उनके बॉस के पिता की मृत्यु हो गई है, बल्कि आश्चर्य इसलिये हुआ कि इतने बड़े साहब के पिता वृद्धाश्रम में पड़े हुए थे.

साहब के दोनो भाई भी अच्छे पद पर थे. शायद तीनों के बंगलों में वृद्ध पिता के लिये जगह उपलब्ध नहीं थी. नये बंगले में पुराने फर्नीचर क्या शोभा देगें. वृद्धाश्रम भेजे जाने से पूर्व वे अपने तीनों बेटों के पास चार-चार माह तक रहते. कोई भी बेटा इस बोझ को चार माह से एक भी दिन अधिक अपने पास नहीं रखता. वह ठीक चौथे माह के आखिरी दिन अगले भाई के यहॉ पटक आता. इसी पटका-पटकी से तंग आकर उनके वृद्ध पिता ने वृद्धाश्रम जाने की इच्छा जाहिर की. तीनों भाईयों ने तुरंत निर्णय लिया और पिता को वृद्धाश्रम छोड़ आये.

आज अंतिम संस्कार कर शमसान से लौटते शाम हो चुकी थी. शमशान घाट पर तीनों भाई दुःखी दिखने का पूरा प्रयत्न कर रहे थे. वापस आकर स्नान आदि से निपट तीनों भाई लॉन में आकर बैठ गए. छोटे ने कहा-‘अच्छा हुआ बूढ़े की मृत्यु हो गई. वरना उनके वृद्धाश्रम में रहने के कारण हमारी बड़ी बदनामी हो रही थी.’

मंझले ने कहा-‘उन्हें घर में रहना भी बड़ा मुश्किल था. शराब छुओ तो बुढ्ढा चिल्लाने लगता. उन्हें कौन समझाए कि हम कोई देशी-वेशी थोड़े पीते है. उन्हें तो हर शराब खराब लगती है.’

बड़े ने कहा-‘हमारे यहॉ तो तितर-बितर कपड़े में कभी भी बाहर आ जाते थे. हमेशा सामने चौकीदार की तरह चेयर डालकर बैठे रहते. जब देखों नसीहत ही नसीहत. हमारे स्टेट्स और इज्जत का तो उन्हें जरा भी ध्यान नहीं था. मेरे यहॉ कैसे चार महीना बीतता था, वह मैं ही जानता हूॅ. पागल कर दिया था. चलो अच्छा हुआ चले गये.’

तीनों भाईयों ने आपस में जाम टकराये और कहा-‘चियर्स फॉर मुक्ति’

++++++++++++++++++++++

जमीन

खड़े हैं....जहां पर हम,
वहां कोई, जमीन नहीं है!
टंगे है, फांसी के फन्दे पर,
फिर भी, उनको यकीन नहीं है!
खड़े है जहां पर हम....।
हम ..जिन्दा नहीं..लाशें है चलती फिरती,
टुकड़े करो हमारे, या गटरों में फेंको!
जिन्दगी हमारी, जिल्लतों-रुसवाई से ज्यादा नहीं
इससे बढ़कर, दूसरी कोई और तौहीन नहीं है!
खड़े है जहां पर हम..।
बिछाओ फूल राहों में उनकी...
जो है, आदी मखमली बिस्तर के!
हमें-नंगे पांव ही मुबारक, छालों भरे...
इस-जहां की, वादियां हमें, रंगीन नहीं है!
खड़े है जहां पर हम...।
झेल चुके है, झटके इतने सारे कि
अब, जलजला तक, असर नहीं करता!
गम-या खुशी, का-दिल पर असर नहीं होता
नजर हो या नजारा, हमको कुछ भीा रंगीन है!
खड़े है जहां पर हम.

इन्द्र बहादुर सेन, पिथौरागढ़

स्नेहाश्रम : जरा हंस दो मेरे माय

✂यार सोहन, तुम्हारा लड़का तो विदेश में रहता है, तुम्हें वहॉ के बारे में कोई जानकारी मिली' प्रमोद ने पूछा 'हॉ, वहॉ स्त्रियां बहुत छोटी आयु में मर जाती है.
सोहन ने बतलाया-क्योंकि मेरा लड़का लगभग ३ साल बाद यहां आता है और नई पत्नी साथ ले जाता है.

✂ राधा ने अपनी सहेली से पूछा-'पहली नजर के प्यार को क्या कहोगी तुम'
'समय की बचत, सहेली ने बतलाया.

✂राम-तुम्हारे दादाजी ६० वर्ष के हो गये, वह सारा दिन क्या करते है?
मोहन-बैठे-बैठे हमारी सहन शक्ति की परीक्षा लेते है.

✂ राजू दौड़ा दौड़ा आया और बोला-'मम्मी, मम्मी क्या पीला रंग महंगा मिलता है.?
मम्मी ने कहा- नहीं ता?
राजू-'मगर पड़ोस वाली आंटी तो कह रही थी कि बेटी के हाथ पीले करने में दो लाख रुपये लगेगें.

✂ नेताजी डॉक्टर से-''मेरी रिर्पोट जरा मेरी भाषा में बताओ-'
डॉक्टर-'रिर्पोट के अनुसार आपका ब्लड प्रेशर घोटाले की तरह बढ़ रहा है, फेफड़े झूठे आश्वासन दे रहे हे. तथा त्याग-पत्र देने वाले है.

✂ बस बहुत देर से बस स्टैंड पर ही खड़ी थी. एक यात्री ने तंग आकर बस ड्राईवर से पूछा'क्यों भाई ये खटारा बस कब चलेगी?
डाईवर-जब कचरा भर जायेगा.

✂अध्यापक-'राम, जब मैं पढ़ा रहा था तो तुम बोल रहे थे?
राम-नहीं सर, मैं नीद में बोलता नहीं.

✂टीचर- राम से-क्लास में यह शोर कैसा है?
राम-पता नहीं, मैं तो शाम से बाते कर रहा था.

✂सोना-मॉ, क्या कर रही हो?
मॉ-'बेटा बंटू को ग्राइपवाटर पिला रही हूँ, इसके दांत जल्दी निकल आएंगे'
सोना-'फिर तो दादी को भीा पिल दें ताकि उनके दांत भी निकल जाय'

✂ ड्राइंग का अध्यापक-बच्चों छतरी बनाने के लिए क्या-क्या समान चाहिए. सभी बच्चें एक साथ-'सर कागज और पेंसिल.'

✂ दो मूर्ख म्यूजिक देखने गये. वहां उन्होंने एक इंसानी पिंजर देखा जिस पर लिखा था ' १६८०'
पहला मूर्ख बोला-'लगता है इसकी मौत सड़क दुर्घटना में हुई थी.
दूसर मुर्ख बोला-'हां साथ में ट्रक का नंबर लिखा है.'

दमनजीत सिंह मोहाली

++++++++++++++++++++

इस स्तम्भ के प्रायोजकः

स्नेहाश्रम

जिसमें शामिल है-अनाथाश्रम, वृद्धाश्रम, हिन्दी महाविद्यालय, चिकित्सालय, पुस्तकालय, गौशाला

इसमें समाज में तिरस्कृत वृद्धजनों व असहाय बच्चों के रहने खाने, अध्ययन, अध्यापन की सम्पूर्ण व्यवस्था, अध यनरत छात्र/छात्राओं को अति आधुनिक पद्धति से रोजगार परक शिक्षण. अत्याधुनिक उपकरणों से परिपूर्ण गरीबों का निःशुल्क इलाज. विश्व के लगभग सभी बड़े लेखकों की पुस्तकें, पाठ्यपुस्तकों से परिपूर्ण, धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक व सभी प्रकार के प्रकाशन की व्यवस्था, दस हजार गायों को रखने की व्यवस्था तथा गौमाता के त्याज्य सामग्री को औषधीय उपयोग में लाने हेतु शोध/अनुसंधान की भी व्यवस्था.

नोटः १.जो भी व्यक्ति/संस्था १० लाख या इससे ऊपर का सहयोग जिस मद में देगी उसके नाम पर उसका नाम रक्खा जाएगा. २.१ लाख तक का सहयोग देने वाले व्यक्ति के नाम पर कमरे का नाम, पुस्तकालय में ५ लाख देने पर पुस्तकालय का नाम उसके नाम पर कर दिया जायेगा. ३. आप सहयोग सीमेन्ट, बालू, ईट, छड़ व अन्य उपयोग की सामग्री देकर भी कर सकते हैं. ४. इन संस्थाओं को संचालन एक कमेटी के तहत किया जाएगा. आप अपना सहयोग संस्थान के युनियन बैक ऑफ इंडिया की किसी शाखा के खाता सं० 538702010009259 में जमा कर रसीद भेज सकते है. संस्थान का सदस्यता फार्म व विवरण उपलब्ध है-www.swargvibha.tk,

जनसहयोग द्वारा, जनसहयोग से, जन के लिए

सहयोग के लिए लिखें या मिलेंः सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-१४४/६३, सेक्टर-२, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद **email:** sahityaseva@rediffmail.com

प्रिय भैया/बहिनों
आप लोगों को विभिन्न विधाओं में निपुण सुरम्या दीदी के बारे में दे रही हूँ. आशा है आप लोग इनसे प्रेरणा लेगें. आपकी बहन
संस्कृति 'गोकुल'

नन्ही प्रतिभा: सुरम्या शर्मा

कहानी लेखन, शास्त्रीय संगीत, कत्थक नृत्य तथा चित्रकला, चारों विधाओं में निपुणता और पढ़ाई में भी अव्वल प्रदर्शन, एक ही विद्यार्थी में एक साथ प्रायः इतने गुण देखना दुर्लभ होता है. लेकिन कुछ बच्चे वाकई ऐसे होते है जो कहलाते हैं हरफनमौला. दिल्ली पब्लिक स्कूल, नई दिल्ली में आठवी की छात्रा सुरम्या शर्मा में ये सभी गुण है. बहुआयामी प्रतिभा की धनी यह बालिका मंच पर आती है तो हर कोई मंत्रमुग्ध हो जाता है.

बचपन से अपनी मां के मुख से सुनी कहानियों को अपने तरीके से सुनाकर सबको चकित कर देने वाली सुरम्या ने पहली कक्षा में जब लिखना सीखा, तभी से छोटी-छोटी कहानियां भी लिखनी शुरु कर दी. उसकी यह प्रतिभा निरंतर विकसित होती गई तथा विद्यालय पत्रिका के अतिरिक्त समाचार पत्रों और बाल पत्रिकाओं में उसकी कहानियां प्रकाशित होने लगी.

वर्ष २००६ में सुरम्या की ग्यारह कहानियों के दो संकलन शिवानी बुक्स, किताब घर प्रकाशन संस्थान से प्रकाशित हुए. 'मूली भूल गया' और 'शहद का लालच' नामक इन दोनों पुस्तकों का लोकार्पण अल्मोड़ा में हुआ. यहां आयोजित बाल साहित्य सम्मेलन में ४ जून २००६ को कुमाऊं विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.आर.सी.पंत ने पुस्तकों का लोकार्पण किया. सुरम्या का लेखन यहीं नहीं थमा. वह अपने लेखन में लगातार सक्रिय रही और कहानी व कविता लेखन द्वारा रचना के क्षेत्र में अनवरत आगे बढ़ती रहीं.

सुरम्या शर्मा की कहानी 'रत्नाकर' को 'स्कालेस्टिक इंडिया' द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित कहानी प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है. कक्षा ४ से ६ तथा ७ से ६ दो वर्गो में आयोजित इस प्रतियोगिता में हिंदी तथा अंग्रेजी की कविता और कहानी विधा की ३५०० से अधिक प्रविष्टियां प्राप्त हुई, जिनमें से सोलह प्रविष्टियां राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए चुनी गई थी. अगस्त २००६ में पुरस्कार के रुप में सुरम्या शर्मा को दो हजार रुपए, प्रमाणपत्र तथा पुस्तक खरीदने के लिए दी जाने वाली निश्चित छूट का एक कूपन भी प्रदान किया गया. यह नहीं, सुरम्या की एक कहानी 'आजाद रहने दो' को नव साक्षरों के लिए एस सी ई आर टी द्वारा तैयार किए जा रहे है संकलन में शामिल किया गया है.

सुरम्या बतौर लेखक जिस तरह से अपनी पहचान बना रही है, वह तो काबिले तारीफ है ही, नृत्य के क्षेत्र में भी उसका नाम अनजाना नहीं. शास्त्रीय संगीत तथा कत्थक नृत्य में सुरम्या पिछले चार वर्षो से शंभू महाराज कत्थक अकादमी, रुक्मिणी देवी ललित कला केंन्द्र, दिल्ली कॉलेज आफ म्यूजिक एंड डांस से प्रशिक्षण प्राप्त कर रही है. सुरम्या कई स्टेज शो तथा रेडियों एवं टीवी कार्यक्रमों में भी भाग ले चुकी है. चित्रकला में भी सुरम्या निपुण है. चाहे

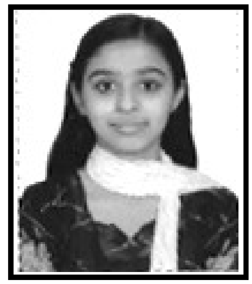

आयल पेंटिंग हो, ग्लास पेंटिग हो, फैब्रिक पेंटिंग हो या कुछ और, सुरम्या की पेंटिंग्स में रंगो और भावों का संयोजन बखूबी देखने को मिलता है. चित्रकला में उसकी बचपन से ही विशेष रुचि है. जब माता पिता को लगा कि सुरम्या चित्रकला सीखना चाहती है तो उन्होंने उसे इसकी विधिवत शिक्षा के लिए हाबी वर्ल्ड, रानी में प्रवेश दिलाया.

धीर, गंभीर और मितभाषी सुरम्या इन सब गतिविधियों में भाग लेने के साथ-साथ अपनी पढ़ाई के प्रति भी पूरी तरह सजग और सक्रिय है.

चंदा मामा

चंदा मामा, कितने प्यारे,
प्रकाशित है भुवन सारे।
गगन में है अनेक तारे
चमकते सदा साथ तेरे।
लुक छुप बादल से खेलते,
हमें भी क्यों है तरसाते।
आओ हम साथ साथ खेलें
खेलते हो क्यों अकेले।
नाराज हो करो क्षमा,
कितने प्यारे चंदा मामा।

हिलारुस लकड़ा, रायगढ़, छ.ग.

फिर बड़ा कद लगे माँगने, बौने आकार के आईने।
घर की दहलीज गिरवी हुई, जश्न हैं आँगने-आँगने।
है अँधेरे का साया घना, कट गये रोशनी के तने।।
बेशकीमत नगीने मिले, छालों के आबगीने मिले।
जब महल की तलाशी हुई, मुफलिसों के पसीने मिले।।

डॉ० मधुर नज्मी, मऊ, उ०प्र०

संसार मोक्ष का द्वार

यह असार संसार नहीं है, सारभूत संसार है।
सारभूत है, इसीलिए तो होता 'हरि' अवतार है।।
यह असार है, सार कहॉ है, कोई भी तो बतलाये।
मोहन सारतत्व पाने को, बोलो जीव कहॉ जाये।।
देवलोक में बने देवता, क्षय पुण्यों का होता है।
मॉ की ममता, क्षमता पाकर कहॉ-कहॉ कह रोता है।।
सतत साधना ध्यान धारणा, इसी धरा पर हो पाती।
पुण्यों की खाली झोली भी, मित्रों यहीं भरी जाती।।
यही धरा चेतन-सत्ता के पाने का आधार है।
जो चाहो सो यहॉ मिलेगा, यही 'मोक्ष' का द्वार है।

++++++++++++++++++++++++++++++++++

यह शहीदों का लहू, जीवन-परीक्षा है।
यह शहीदों का लहू, जीवन्त-शिक्षा है।
यह शहीदों का लहू, भागीरथी पावन।
यह शहीदों का लहू, वेदान्त-दीक्षा है।।
यह शहीदों के लहू का 'गान' वन्देमातरम्।
यह शहीदों के लहू का, मान वन्देमातरम्।।
गीत जो गाये नहीं, वे धरा के दुर्भाग्य है।
राष्ट्र के सौभाग्य का, वरदान वन्देमातरम्।।

राममोहन शर्मा 'मोहन', जालौन, उ.प्र.

++++++++++++++++++++++++++++++++++

देशमन्दिर

देष मन्दिर है हमारा, राश्ट्र ही भगवान
और अंतिम सांस तक गाऊॅ इसी के गान

इसलिए गाऊँ कि इसने देवताओं को जना है
इसलिए गाऊँ कि इसने सत्यपथ संबल चुना
इसलिए गाऊँ कि सुन्दर नीतियों का घर यहॉ है
इसलिए गाऊँ कि गूँजा साधना का स्वर यहॉ है
हम सदा से चाहते है विष्व का कल्याण
देष मन्दिर है हमारा राश्ट्र ही भगवान

जो हमारी भूमि पर रहता उसे यह ज्ञात है
हम सभी के मित्र है, हर जन हमारा भ्रात है
किन्तु जब कोई हमारे प्यार को फटकारता
और बन कर नाग हर उपकार पर फुफकारता
तब सदा करते रहे हम धनुश सर संधान
देष मन्दिर है हमारा राश्ट्र ही भगवान

सभ्यता के षिखर हमने ही सदा चूमे
स्वर्ग के सोपान लेकर विष्व में घूमे
जागरण का मंत्र पहले पहले हमने ही दिया
और मंथन का ज़हर सारा हमीं ने पी लिया
हम विधाता के प्रथम मनु की प्रथम संतान
देष मन्दिर है हमारा राश्ट्र भगवान

साधु डॉ० राधेष्याम योगी, जालौन,उ.प्र.

एक्स-रे

तरह-तरह के फल चख चुके हैं जो,
मन उनका अब भी लगा है "दशहरी" में।
रुपये-पैसे गिने नहीं जाते जिनसे,
नींद नहीं आती रातों को उन्हें मसहरी में।।
दुनिया भर के नियम सचिवालय में है,
और अधिनियम बरसों न सुनने वाली कचहरी में।
हो चला है कायदा, बेकायदा, अलकायदा
और, बाकायदा न्याय पसीने में तर-बतर है दुपहरी में।।

डॉ० कमलेश शर्मा, भोपाल, म०प्र०

++++++++++++++++++++++++++++++++++

पारदर्शी कवित्त

संस्कृति की पहचान, रामसेतु का निर्माण,
भ्रष्ट नेताओं ने मान, बुद्धि ही गॅवाई है।
साक्षी यह इतिहास, घटनाऍ लिखी खास,
बाल्मिी तुलसीदास, दे रहे गवाही है।
नल-नील का कमाल, पुल बनाया विशाल,
पानी में पत्थर तैरे, राम कृपा पाई है।
'पारदर्शी' रामायण, कई भाषा में अर्पण
रामसेतु का वर्णन, समझे सच्चाई है।
'तु' से समझलो 'रामको', 'ल' से लक्ष्मण सुजान।
'सी' से 'सीताजी' मिली, 'तुलसी' की पहचान

छन्दराज ऊँ पारदर्शी, उदयपुर, राजस्थान

++++++++++++++++++++++++++++++++++

ग़ज़ल

धन दौलत का प्यार है झूठा यार फ़कीरी अच्छी है
जगमग सब संसार है झूठा यार फकीरी अच्छी है
लहज़े में खुशबू का मौसम लेकिन दिल में नश्तर है
अब तो हर किरदार है झूठा यार फकीरी अच्छी है
अपनी अपनी अय्यारी है लीग सियासत में गुम है
दिल से दिल का प्यार है झूठा यार फकीरी अच्छी है
जीवन इक मृगतृष्णा है और दुनिया एक छलावा है
सॉसों का हर तार है झूठा यार फकीरी अच्छी है।

दिलीप आज़मी, खुरासों, जिला-आजमगढ़, उ०प्र०

डॉ० चकोर सम्मानित

अ.भा. भाषा साहित्य सम्मेलन के बिहार शाखा के महामंत्री, भाषा भारती संवाद एवं अंग माधुरी के सम्पादक डॉ० नरेश पाण्डेय 'चकोर' को पुष्पगंध ाा प्रकाशन, छत्तीसगढ़ की ओर से साहित्य रत्न सम्मानोपाधि अलंकरण से सम्मानित किया गया. विदित हो कि एकावन पुस्तकों के लेखक/सम्पादक डॉ० चकोर को इसके पूर्व ४३ संस्थाओं से सम्मानित किया जा चुका है.

अखिलेश निगम को युवा साहित्यकार सम्मान

भाऊरस, देवरस सेवा न्यास, लखनउ द्वारा युवा साहित्यकार अखिलेश निगम 'अखिल को काव्य क्षेत्र में अप्रतिम योगदान के लिए पं. प्रताप नारायण मिश्र स्मृति युवा साहित्यकार सम्मान-२००७ प्रदान किया गया. यह सम्मान उनकी काव्य कृतियों अभिलाषा तथा उत्तर देगा कौन? के लिए प्रदान किया गया है.

श्री निगम को अभी हाल ही में कादम्बरी संस्था द्वारा जबलपुर के शहीद स्मारक भवन में काव्य एवं गीत के क्षेत्र में अप्रतिम योगदान हेतु पंडित भवानी प्रसाद तिवारी गीतकार सम्मान २००७ एवं ११०० रुपये के नगद पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

लाल को दिल्ली रत्न पुरस्कार

लाल कला, सांस्कृतिक एवं सामाजिक चेतना मंच, नई दिल्ली के सचिव एवं लघु शिल्पी लाल बिहारी लाल द्वारा सम्पादित काव्य संकलन लेखनी के रंग का लोकार्पण आर्य स्नातकोतर महाविद्यालय, पानीपत में जैमिनी अकादमी द्वारा आयोजित महादेवी वर्मा जन्म शताब्दी समारोह में किया गया. उक्त समारोह में श्री लाल को हिंदी भाषा एवं साहित्य सेवा में उत्कृष्ट रचना धर्मिता एवं सामाजिक क्षेत्रों में अमूल्य सेवाओं के लिए जैमिनी अकादमी द्वारा दिल्ली रत्न से नवाजा गया.

कवयित्री तारा सिंह को कवि कुलाचार्य

साहित्य संगम, उदयपुर द्वारा छायावादी कवयित्री तारा सिंह मुम्बई को उनकी अभूतपूर्व साहित्यिक सेवाओं के लिए कवि कुलाचार्य की मानदोपाधि द्वारा अलंकृत किया गया. श्रीमती सिंह को अब तक लगभग ६५ विभिन्न संस्थाओं द्वारा सम्मानित की जा चुकी है.

बाल कृष्ण पाण्डेय सम्मानित

राष्ट्रीय रामायण मेला आयोजन समिति के अध्यक्ष, भारतीय ग्रामीण पत्रकार संघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय स्वतंत्र लेखक मंच, दिल्ली शाखा उ०प्र० के अध्यक्ष बार एसोसिएशन बोर्ड आफ रेवेन्यू, उ०प्र० इलाहाबाद के महासचिव, बाल कृष्ण पाण्डेय, एडवोकेट को महात्मा गांधी की कर्मस्थली, विनाबा भावे की साधना स्थली, महाराष्ट्र राज्य के वर्धा जिले में अजय प्रकाशन द्वारा सम्मानित किया गया. राज्य सभा के सांसद एवं विश्व हिंदी सम्मेलन के सचिव, डॉ० रत्नाकर पाण्डेय ने श्री पाण्डेय को सम्मान पत्र, प्रतीक चिन्ह, पुष्प गुच्छ एवं शाल ओढ़ा कर सम्मानित किया. श्री पाण्डेय को यह सम्मान उनकी उत्कृष्ट साहित्यिक एवं सामाजिक सेवाओं के लिए प्रदान किया गया. कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ० अनन्त राम त्रिपाठी ने किया तथा संचालन प्रसिद्ध कवियत्री डॉ० वर्षा पुनवटकर ने किया.

अखिल भारतीय सम्मान समारोह २००८

जैमिनी अकादमी द्वारा इस वर्ष निम्न सम्मान दिये जायेंगें-

१. कबीर सम्मान २. हाली पानीपती सम्मान ३. आचार्य सत्यपुरी नाहनवी सम्मान ४. काका हाथरसी सम्मान ५. कृष्ण दत्त तूफान पानीपती सम्मान ६. माता सीता रानी सम्मान ७. आचार्य सम्मान

उपरोक्त सम्मान हेतु लेखक, पत्रकार, समाज सेवी, भाषा प्रचारक आदि से आवेदन आमन्त्रित है. प्रत्येक राज्य में प्रत्येक सम्मान एक-एक को प्रदान किया जाएगा. इनके अतिरिक्त प्रत्येक राज्य में एक रत्न प्रदान किया जाएगा. जैसे- हरियाणा रत्न, पंजाब रत्न, राजस्थान रत्न आदि सभी राज्यों में प्रदान किये जाएंगे. उपरोक्त सभी सम्मानों के लिए निम्नलिखित विवरण सहित आवेदन करें:- १. नाम २. जन्म तिथि ३. जन्म स्थान ४. शिक्षा, ५. प्रकाशित पुस्तक/पत्र-पत्रिका ६. समाज सेवा/भाषा प्रचार का विवरण ७. प्राप्त सम्मान/पुरस्कार आदि का विवरण के साथ फोटो तथा दो सौ रुपये का बैंक ड्राफ्ट सहित आवेदन करें. अगर उपरोक्त कोई भी सम्मान आपको प्रदान नहीं किया जाता है तो ऐसी स्थिति में प्रशस्ति पत्र से अवश्य सम्मानित किया जाएगा. जो किसी कारण से समारोह में नहीं आा सकेगें, उन्हें सम्मान डाक से भेज दिया जाएगा.

<u>अन्तिम तिथि २८/०५/०८</u>

डॉ. बीजेन्द्र कुमार जैमिनी,
निदेशक, जेमिनी अकादमी, हिन्दी भवन, ५५४-सी, सेक्टर-६, हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी, पानीपत-१३२१०३, हरियाणा

कीजिए घर की खेती उगाइए सिर पर बाल

प्रेमा राय

पिछले दिनों एक खबर बड़े जोरो पर थी कि सलमान खान के सिर पर बाल पुनः बढ़ गये है और इससे उन्हें अपनी फिल्मों में लेने वाले निर्माता-निर्देशकों की जान में जान आई है. खबर के अनुसार सलमान अपने गंजे होते सिर का इलाज करवाने विदेश गए थे, जहॉ इलाज में कुछ गड़बड़ हो गयी. फलतः उनको अपने सारे बाल खो देने पड़े थे. खैर, ये तो थी सितारे से जुड़ी खबर, पर हेयर ट्रांसप्लांटेशन आज वाकई घर की खेती करने जितना आसान हो गया है. हॉ इसके लिए सही मार्गदर्शन व सलाह आवश्यक होती है.

हेयर ट्रांसप्लांटेशन का मतलब होता है स्थायी बालों का उस क्षेत्र के साथ शल्य क्रिया करना जहां से त्वचा पर से बाल उड़ गए होते है. यह बालों को झड़ने से रोकने का एक बहुत ही प्रभावी एवं स्थायी समाधान है. हेयर ट्रांसप्लांटेशन एक रुपात्मक शल्य क्रिया है, जिसे एन्ड्रोजेनिक एलोपेशिया के खतरे और स्थायी एलोपेशिया के अन्य कारणों को ठीक करने में प्रयोग किया जाता है.

हेयर ट्रांसप्लांटेशन सीमित एलोनेश्यिा के अंतर्गत बाहरी रोगी प्रक्रिया के जैसा पूरा किया जाता है. सिर की सतह पर और पीछे की तरफ स्थायी बालों के 'डोनर एरिया' से बालों और पुटक (फॉलिकल्सः त्वचा पर छोटे-छोटे छेद करना जिससे बाल उगाए जाते है) को निकाल दिया जाता है. इस क्षेत्र को तुरंत ही बालों के चारों ओर छिपा दिया जाता है.

निकाले गये पुटक (फॉलिकल्स) को फिर विभिन्न नापों के विशिष्ट अधिरोपणों (ग्राफ्ट) में विभाजित किया जाता है. सबसे छोटे रोपण में १ से २ बाल होते है और इसे फॉलिक्यूलर यूनिट या माइक्रोग्राफ्ट के नाम से जाना जाता है. सबसे बड़े ग्राफ्ट में ६ बाल तक होते हैं और हर ग्राफ्ट पूरी गहराई तक प्रत्यारोपित हो सकता है. ग्राफ्ट की संख्या व प्रकार मरीज के बालों के प्रकार, गुणवत्ता, रंग और वह क्षेत्र जो प्रत्यारोपित किया जाना है, पर निर्भर करता है. एक बार ग्राफ्ट बन जाने के बाद इसे पतले क्षेत्र में डाल दिया जाता है.

वह जगत जहॉ बाल लेने होते हैं, यह साधारणतः वही स्थान होता है, जिसे इस क्षेत्र में स्थायी बालों द्वारा छुपा दिया जाता है. इस प्रक्रिया के बाद जहां ग्राफ्ट लगाए जाते है, वहां छोटे-छोटे निशान या धब्बें पड़ जाते हैं. प्रारंभ में इस क्षेत्र में ५ से १४ दिन तक कुछ पपड़ी सी बन जाती है, लेकिन इसके बाद इस क्षेत्र में ऐसा कुछ भी साधारणतः नहीं देखा जाता.

बालों के प्रत्यारोपण के लिए मूल्यांकन करने से पहले यह तय करना बहुत महत्वपूर्ण या जरुरी है कि बालों के झड़ने का कोई अन्य औपचारिक कारण तो नहीं है.

इस प्रत्यारोपण की कीमत उस क्षेत्र की मात्रा पर निर्भर करती है, जिस क्षेत्र में गंजापन होता है व वहां प्रत्यारोपण करने की जरुरत होगी. अधिकतर ग्राफ्ट अधिक गंजेपन या पतले क्षेत्र को ढकने और वालों के घनत्व को बढ़ाने के लिए ही प्रयोग किया जाता है क्योंकि यह प्रक्रिया बहुत अलग है. इसलिए इसकी कीमत भी विशिष्टता पर ही आधारित होती है.

सामान्य रुप से बालों का प्रत्यारोपण उन युवा मरीजों, जिनकी आयु २० वर्ष तक होती है, के लिए उपयोगी नहीं होती. क्योंकि इनके बालों के झड़ने में वृद्धि के कारणों का पता लगाना बहुत कठिन होता है. बालों की सर्जरी करने के लिए मेडिकल और टेक्नीकल दोनों प्रकार के विशेषज्ञ लगते है. इसके साथ-साथ बालों की प्राकृतिक वृद्धि के लिए एथेस्टिक मूल्यांकन करने की जरुरत होती है. अनुभवी डॉक्टरों के हाथों द्वारा बालों के प्रत्यारोपण कराने से और छोटे ग्राफ्टों के साथ नई तकनीकों का प्रयोग करने से अच्छे एथेस्टिक परिणाम प्राप्त होते है. इसके बाद जैसे ही आपके बाल बढ़ना शुरु होगे, उसके बाद से आप अपने बालों का अपनी इच्छानुसार कर्ल, साफ, पर्म और किसी भी प्रकार का हेयर स्टाइल बना सकेंगें.

खड़ा हूँ, बैठा नहीं

एक अमेरिकी टूरिस्ट ने इटली के किसी छोटे से नकर के एक रेस्तरां में दो अंडे एक चाय मंगवाई. वेटर जब बिल लाया, उसमें ५००/रुपये लिखे थे. क्यों, क्या इधर अंडे बड़ी मुश्किल से मिलते है? टूरिस्ट ने पूछा-' नहीं टूरिस्ट बड़ी मुश्किल से मिलते है.-जवाब दिया.

कंडक्टर-'भाई साहब, टिकट'

यात्री-टिकट नहीं है भाई

कंडक्टर-आप जानते नहीं, बिना टिकट बस में बैठना अपराध है.

यात्री-पता है, इसीलिए खड़ा हूँ, बैठा नहीं. **दमनजीत सिंह,** मोहाली

वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० श्रीमती तारा सम्मान योजना

स्वर्ग विभा टीम ने वरिष्ठ साहित्यकार एवं टीम की निदेशक श्रीमती तारा सिंह के सम्मान में सन् २००८ से प्रतिवर्ष एक उच्च स्तरीय रचनाकार को सम्मानित करने का निर्णय लिया है. सम्मान स्वरुप १५००/-रुपये, शाल एवं प्रशस्ति-पत्र देने का प्राविधान है. इसके लिए निःशुल्क प्रविष्टि गद्य/पद्य/ग़ज़ल विधा में प्राकाशित कृति की दो प्रतियों में, दो छायाचित्र, जीवन परिचय के साथ आमंत्रित है. अंतिम तिथि ३० नवंबर २००८, लिखें-

डॉ० बी.पी.सिंह,

बी-६०५, अनमोल प्लाजा, सेक्टर-८, खारघर, नवी मुम्बई-४१०२१०

अथवा

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी,

सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, साहित्य सदन, एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११

<u>नोट</u>: स्वर्ग विभा टीम का निर्णय अंतिम एवं सर्वमान्य होगा. सम्मान अगले साल फरवी/मार्च में विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा आयोजित छठवे साहित्य मेला, इलाहाबाद में प्रदान किए जाएंगें.

स्वर्ग विभा टीम द्वारा हिंन्दी सेवी संस्थानों को सहयोग

राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी सेवी संस्थानों को जो निःस्वार्थ भाव से हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए सतत प्रयत्नशील है, उन्हें बेवासाइट पर प्रकाशन सम्बन्धी, हर संभव सहयोग देने का निर्णय टीम ने लिया है. इसी संदर्भ में विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद जो वर्ष २००१ से ही लगातार हिन्दी के प्रचार तथा विभिन्न सामाजिक कार्यो में उल्लेखनीय योगदान करती आ रही है, उनके निवेदन पर संस्था की सदस्यता ग्रहण एवं अन्य कार्यक्रम सम्बंधी विज्ञापनों को इस वेबसाइट पर निःशुल्क प्रकाशित करेगी. www.swargvibha.tk, swargvibha@gmail.com

काव्य संकलन कैसे कहूं का विमोचन सम्पन्न

राष्ट्रीय काव्य संकलन कैसे कहूं का विमोचन जान्हवी होटल, मिर्जापुर,उ.प्र. में सिटी मजिस्ट्रेट विजय बहादुर के कर कमलों द्वारा किया गया.

मुख्य अतिथि श्री विजय बहादुर ने कहा-संकलन के संपादक सूर्य नारायण शूर, साहित्य सेवा के लिए बधाई के पात्र है. आज की युवा पीढ़ी साहित्य सेवा से दूर होती जा रही है. साहित्य सृजन की कौन कहे वह अच्छे साहित्य की किताबो को पढ़ना पसंद नहीं करती.

विमोचन के पश्चात काव्य गोष्ठी एवं मुशायरे का आयोजन किया गया. कार्यक्रम कें अत में संकलन के संपादक एवं युवा साहित्य सेवी सूर्य नारायण शूर ने आभार व्यक्त किया.

शीघ्र प्रकाश्य <u>१५० प्रतियां बुक हो चुकी है</u> **शीघ्र प्रकाश्य**

अपनी प्रतियां बुक करायें, और हजारों के ईनाम पाए

आरक्षण, जातिवाद और नारी शोषण के खिलाफ जबरदस्त आवाज बुलंद करने वाला हर युवा के दिल की आवाज, हर नारी के मन की सोच को उजागर करने वाला **गोकुलेश्वर कुमार 'राही अलबेला'**का

लघु उपन्यास

रोड इंस्पेक्टर

कीमत 20 रुपये

अपनी प्रति अभी सुरक्षित करवा लें. कहीं देर ना हो जाए..............

आप अपनी प्रति पोस्ट आफिस और बैंक चार्जेज से बचने के लिए यूनियन बैंक की किसी शाखा सें खाता संख्याः जमा कर अपनी रसीद की कापी अपने पते के साथ कार्यालय को भेज देवें अथवा मनिआर्डर/बैक डाफ्ट. भेजें. चेक स्वीकार्य नही होगा. प्रत्येक बुकिंग का एक नंबर है, उनमें से कुछ नंबर ईनामी है.

लिखेंः **प्रसार सचिव,**

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११

मो० ६३३५१५५६४६ **email:** roadinspector@rediffmail.com

पत्रिका में एक आध्यात्मिक सम्पुट है

विश्व स्नेह समाज पत्रिका के नवम्बर २००७ के अंक को भेजने के सौजन्य के लिए मेरी हार्दिक कृतज्ञता। आपने सात वर्ष की अवधि भी पूर्ण की है जिसका तात्पर्य है कि आप नव-सहस्त्राब्द के जातक हैं जिसमें विश्व-सद्भावना का सर्वांगीण समायोजन परम हितकारी होगा।

पत्रिका में एक आध्यात्मिक सम्पुट है और साथ ही एक अर्थ-विज्ञापनीय लालसा भी। मुद्रण की भूलों से बचने की आदत प्रखर होनी चाहिए। रचनाओं की मौलिक चिन्तन धारा एवं हितकारी सृजन चेतना ही उन्हें साहित्य का दर्जा दिलवा सकेंगी। अभी तो पत्रिका सूचनामूलक अधिक लगी जिसमें अनेक रचनाकारों के बहुप्रकारेण संदर्भ हैं। तब भी कुछ कुछ श्रेयस्कर अवश्य है।

आपके सत्कार्यों की अनुशंसा अन्य रुचि-सम्पन्न मित्रों से करूंगा।

प्रो. प्रेम मोहन लखोटिया
जयपुर, राजस्थान

++++++++++++++++++++++++

अत्र कुशलम तत्रास्तु।

सम्मानित पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' का अंक प्राप्त हुआ. शायद नमूने के लिए पुराना अंक भेजा गया है. अंक में सामयिक, विविध, ज्ञानबर्धक, रोचक, विचारोत्तेजक सामग्री पढ़कर हर्ष हुआ.

हिन्दी की पत्रिकाओं मं रचनाकारों के सामने अनेक समस्यायें मुँह बायें खड़ी रहती है. अनके पत्र अपने स्तर गिराकर मनोरंजन का कर लेती है या करने पर विवश हो जाती है जैसा कि आज कल हिंदी कवि सम्मेलनों की दश दुर्दशा हो रही है. इस अंक में गद्य पद्य की सभी रचनायें स्तरीय है. बधाई.

राजन चौधरी, पत्रकार, हैदराबाद

+++++++++++++++++++++

पत्रिका के बारे में जानकारी मिली. मैं हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ता रहता हूँ. लेखन भी करता हूँ. आपकी पत्रिका को देखने-पढ़ने का मौका नहीं मिला है. कृपया इसकी एक प्रति भेजने का कष्ट करें.

राजीव कुमार झा, लखीसराय, बिहार

+++++++++++++++++++++++

पंचम साहित्य मेला हेतु आपका आमन्त्रण प्राप्त हुआ. आभार. भव्य आयोजन के लिए हार्दिक बधाई. समारोह की सफलता पूर्वक सम्पन्नता हेतु हम सबकी ओर से अनेकानेक मंगल कामनाएँ.

महावीर प्रसाद मूकेश, सिरसा, हरियाणा

+++++++++++++++++++++++

आप द्वारा सम्पादित मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' फरवरी-मार्च २००८ अंक प्राप्त हुआ. आभारी हूँ. यह विशेषांक मुम्बई की वरिष्ठ कवियित्री डॉ. तारा सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आधारित है. आपका नाम कई जगह सुन व देख रक्खा है पर याद नहीं आ रहा है.

कृष्णस्वरुप पाण्डेय 'निर्बल',
सम्पादक, नागरी वाड्मय, बहराइच, उ.प्र.

+++++++++++++++++++++++

डॉ. तारा में पर्याप्त ऊर्जा है

विश्व स्नेह समाज का डॉ० तारा सिंह विशेषांक मिला. पूरा पढ़ा. तारा जी के बारे में विस्तृत जानकारी मिली. खुशी हुई. उनको कई पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ा भी है. वे निसंदेह विदुषी है. काव्य मर्मज्ञ है तभी तो १६ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है. और आगे भी अनेक आने को होंगी ही. उनमें लेखन के प्रति ऊर्जा भी है. उन पर आपका यह विशेषांक भी महत्वपूर्ण बन गया है. बधाई स्वीकारें.

ज्ञानेन्द्र साज, सम्पादक, जर्जर कश्ती, अलीगढ़, उ.प्र.

+++++++++++++++++++++++

सफल आयोजन के लिए साधुवाद

सप्रेम अभिवादन

साहित्य समारोह-२००८ के सफल आयोजन के लिए साधुवाद. आपकी संगठन क्षमता और शान्त कार्य-शैली से अभिभूत हूँ. सचमुच गोकुलेश की आप पर कृपा है. कामना है, उनकी कृपा सदैव आप बनी रहे.

कार्यक्रम में व्यवस्तता और अल्प प्रवास के कारण आपसे तथा अन्य मित्रों से अधिक बात नहीं हो सकी थी. भविष्य में यदि सुयोग मिला, तो दो-एक दिन वहाॅ ठहरने का आनन्द लूंगा.

आशा है सानन्द है.

डॉ. कृष्ण मुरारी शर्मा,ग्वालियर,म.प्र.

+++++++++++++++++++++++

सर्वप्रथम मैं आपकी व निर्णायक मंण्डल की तहेदिल से शुक्रगुजार हूँ कि आपने सम्मान हेतू चयन कर मेरा सम्मान व हौसला बढ़ाया है. परन्तु किन्हीं विषम परिस्थितियों की वजह से उन अनमोल क्षणों को संजोने के सौभाग्य से वंचित रहना पड़ा, जिसका बेहद अफसोस है. आप सबसे इसके लिए करवध क्षमा प्रार्थना करती हूँ. फिर भी इस महासमर में शिरक्त ना कर पाने का का खेद हमेशा ही रहेगा. आशा है आप भी हमें अवश्य क्षमा का दान देंगें.

निर्मला चन्देल, शिमला, हि.प्र.

++++++++++++++++++++++++

हो जावें सभी संयमी-त्यागी जीतेन्द्र।
देता बधाई गोकुलेश्वर अग्रज फणीन्द्र।।
नमन स्वीकारो मेरा हे गोकुलेश्वर।
आकर सबको फिर से दो निर्भयता का वर।।
भेजा है यह होली पर भाव अबीर।
स्वीकारो इसे गोकुलेश्वर धीर-बीर।।
भाव अबीर विश्व स्नेह समाज को लगा देना।
एक प्रति प्रिय स्नेह समाज की प्रेषित कर कृतार्थ कर देना।।

फणीन्द्र कुमार पाण्डेय, चम्पावत, उत्तराखंउ

ग़ज़ल

कितने पर्दो में, हिज़ाबों में नज़र आते थे
आप अक्सर हमें ख़्वाबों में नज़र आते थे
आपको पास से देखा तो हमें याद आया
फासले ख़त के जबाबों में नज़र आते थे
ऐसा लगता है कि ऑखों से पिये जाते है
अक्स ऑखों के शराबों में नज़र आते थे।
अनगिनत आपके अफ़साने पढ़े है हमने
आप ही थे जो किताबों में नज़र आते थे
'रचश्री' हमने तो ऐसे भी उजाले देखे
जो ॲधेरे की नक़ाबों में नजर आते थे।

+++++++++++++++++++

भूल जाना तो एक बहाना है
इस बहाने भी याद आना है
और तो कुछ नहीं है अपने पास
चन्द यादों का एक खजाना है
जिन्दगी खूब है और कुछ भी नहीं
सिर्फ एक सॉस का फ़साना है
कौन रहता है इस सराय में
सब मुसाफिर है सबको जाना है
आदमी आदमी का है दुश्मन
'रचश्री' यह अजब जमाना है

रमेश चन्द्र श्रीवास्तव, मऊ, उ०प्र०

+++++++++++++++++++

बाढ़ का घर

एक बार फिर
बाढ़ आ गयी है
सपने उम्मीदें
बहा ले गयी है
एक बार फिर
बाढ़ आ गयी है
मुन्ने की चर्खी हो
या
मुन्नी की गुड़िया
अम्मा का कगंन हो
या
बूढ़ी मैसियां
सब कुछ बहा ले गयी है
एक बार फिर
बाढ़ आ गयी है
गिरती है दीवारें
टूटते है सपने
तैरता है अनाज
नालियों के बीच
घर न रहा घर
मैदान हो गया है
ख़ुशियां जैसे कोई
लूट ले गया है
पूछता है मुन्ना
इस बाढ़ का घर कहॉ है

शिशिर द्विवेदी, बस्ती, उ०प्र०

+++++++++++++++++++

मन को कैसे बांधू?

सुन्दर था शुभ दर्पण
करता उनको अर्पण
चटका कैसे सांधूं
मन को कैसे बांधू
खलबली नगरिया में
पतझण बन-बगिया में
उजड़ी कैसे सांभूं
मन को कैसे बांधू
लाली उड़ी भोर की
पांखे जकड़ी मोर की
उपलवृष्टि में फॉयूं
मन को कैसे बांधूं
अन्न जल बह गया
प्यासा व्यथा कह गया
नहीं अगन क्या रॉधू
मन को कैसे बांधू
अंधी इस दुनिया मं
सूनी इस दुनिया में
साज कौन से सांजूं
मन को कैसे बांधू
गंध गई गुलाब की
रातें नहीं ख्वाब की
घट रीता क्या बॉटूं
मन को कैसे बांधू।

मुखराम माकड़ 'माहिर',हनुमानगढ़, राजस्थान

जनून

सदियों का सफ़र तय कर
गिरते उठते हम पहुॅच गये
सभ्यता के उच्च्व शिखर पर
देखा वहॉ जो जनूनी नज़ारा
कॉपने लगा जिस्म सारा
चेहरा हुआ पीला ज़र्द
खून हुआ जम कर सर्द
इन्सानों की भीड़ जला रही थी
एक ज़िन्दा इन्सान को!
आपस में कोई जान ना पहचान
अ़जनबी लोगों का एक हुजूम
ऑखों में खून, हाथों में खॅजर
वहशत दरिंदगी का एक मॅज़र
किसी अभ्यस्त शिकारी से
बिना किसी जुर्म के यूं ही
दौड़ा रहे थे एक इन्सान को!
सत्यं शिवं सुन्दरं का अर्थ
खो गया खूनी चौराहे पर
मस्जिद में चुप है कुरान
मन्दिर में सहमा गीता का ज्ञान
धर्म की कौन कराये पहचान?
सागर धरती गगन-चॉद-तारे
कुदरत सबको लुटाये नज़ारे
ओ! आदम-हव्वा के बेटों
सिर्फ़ प्यार दो इन्सान को!

डॉ० सुमि ओम शर्मा'तापसी', मुंबई

क्या आप खाना मांगकर खाते है?
क्या आप पानी मांगकर पीते है?
क्या आप कपड़े मांगकर पहनते है?
तो फिर पत्र-पत्रिकाएं ही क्यों?
इन्हें भी खरीदें और पढ़ें.

गांधीगिरी

पवन चौधरी, नई दिल्ली

दोनों का व्यवसाय एक था पर उनकी प्रकृति-प्रवृत्ति में अंतर ज़मीन-आसमान का सा था. एक अनुभवी, सज्जन एवं सामान्य, तो दूसरा बहुत अनुभवी, असामान्य तथा तेज-तर्रार नेता. एक साहित्यिक संस्कारों की सन्तान तो दूसरा राजनीति का पंडा अथवा पांखड. एक का आचरण-आवरण सदैव एक समान तो दूसरे का गिरगिटिया. एक साहित्य का गुड़ था तो दूसरा राजनीति का गोबर.

एक बार न्यायालय के परिसर में साहित्यकार-वकील ने अखबार में लेख द्वारा नेता की दादागिरी का पर्दाफाश कर दिया. नेता को आग-बबूला होना ही था. उसने नेतागिरी के नशे में दूर से पुकारा, 'ओ भाई चौधरी, जरा इध ार तो आ.' स्वयं उसके निकट जाने की बजाय साहित्यकार-वकील ने संकेत द्वारा नेता को निकट आने के लिए कहा.

'ओ भाई चौधरी, तूने उस लेख मे क्या लिख दिया? नेता ने उसके निकट आते ही पूछा.

'कौन सा लेख. मैं तो लेख लिखता रहता हू'. अनजान बनते हुए साहित्यकार-वकील ने जानना चाहा.

'वहीं लेख जिसमें तूने मेंरे बारे में अंट-शंट लिखा है.'

'देखिए, मैंने लेख में केवल वही पत्र छापे हैं जो आपने मुझे लिखे हैं. अपनी ओर से मैंने एक शब्द नहीं लिखा. फिर भी यदि आपको कोई आपत्ति है तो आप संपादक से संपर्क करें या लिखे.' साहित्यकार-वकील ने सहज में उत्तर दिया.

'अगर तू बार का मेम्बर नहीं होता तो मैं अभी तेरी टांगे तोड़ देता. फिर कभी तूने ऐसा कुछ मेरे बारें में लिखा तो देख लूंगा.' नेता गुर्राया और चलता बना. साहित्यकार-वकील ने शांत रहना बेहतर समझा.

कुछ वर्ष पश्चात् एक दिन कचहरी के परिसर में कैन्टीन के निकट नेता चेले-चपटों से घिरा खड़ा था. उसने दूर से साहित्यकार-वकील को देखा. मसखरे अंदाज में फिर पुकारा, 'ओ भाई चौधरी'

इधर-उधार खड़े बैठे अनेक वकीलों के कान खड़े हो गये. साहित्यकार वकील के कान पर कोई जूं नहीं रेंगी. सिर झुकाकर आगे अग्रसर होता गया. नेता ने तनिक ऊंची आवाज में फिर पुकारा, 'ओ भाई चौधरी!' उसने फिर अनसुरा कर दिया. अंततः नेता स्वयं वकील के सामने जा खड़ा हुआ. उसने उससे जवाब न देने का कारण पूछा.

'मैंने आपकी पुकार भली प्रकार सुन ली थी, किन्तु उत्तर देना अनावश्यक समझा' साहित्यकार वकील ने शालीनतापूर्वक उत्तर दिया.

'ऐसा क्यों भाई?' नेता ने पुलिसिया ढंग से पूछा.

'क्योंकि जब कभी चाहे-अनचाहे मुझे आपका स्मरण हो जाता है अथवा मैं आपकों कहीं देख लेता हूँ तो मुझे अपनी टांगो की चिंता सताने लगा जाती है.' साहित्यकार-वकील ने गांध ीगिरी का हंटर मारा, हौले से. नेता के भीतर का घाव तो समय ने भर दिया था, पर उसका निशान अमिट ही रहा.

++++++++++++++++++++++

ईश्वर का न्याय

डॉ. महावीर सिंह

आज कालिका के भाग्य का फैसला था. जज ने कालिका को हत्या के आरोप से, मौके के चश्मदीद गवाह न होने के कारण साफ बरी कर दिया था. यद्यपि गॉव-जवार में सभी जानते थे कि विधवा रामकली के एक मात्र पुत्र की हत्या जायदात के लालच में कालिका ने ही की है.

शाम को रामकली अपने दरवाजे दुखी उदास बैठी थी. उधर से कालिका निकला. उसने रामकली को अकेली बैठी देख, ललकारते हुए कहा-'तुमने मुझ पर झूठा आरोप लगाया था. देख लिया अदालत ने मुझे साफ बरी कर दिया.

रामकली ने बुझे स्वर में उत्तर दिया-'कालिका आरोप तो सही है तुम ने ही मेरे बेटे की जान ली है. तुम कानून को धोका दे सकते हो, क्योंकि वह अंधा होता है, सबूतों और गवाहों की बैशाखी के सहारे चलता है, लेकिन भगवान को धोका नहीं दे सकते, वह ऑख न होते हुए भी सब कुछ देखता है उस की लाठी बिना आवाज टूटती है. देखना जिस धन सम्पत्ति के लिए तुमने यह पाप किया है, उस का भोग तुम इस जनम में नहीं कर सको. मेरी दुखी अंतरात्मा की यह आवाज है, गॉठ बांध लो.

एक वर्ष भी नहीं बीता. कालिका जीप लेकर बुकिंग में जा रहा था. निश्चित समय से काफी विलम्ब हो गया था, अतः तेजी से जीप दौड़ाता चला जा रहा था कि अचानक मोड़ पर सामने से तीव्र गति से आते ट्रक से आमने सामने की टक्कर हो गई. जीप का आगे का हिस्सा बिलकुल ही पिचक गया. जिससे कालिका स्टेयरिंग और सीट के बीच में दब गया. पसलियां टूट कर हृदय और फेफड़ें में घुस गई जिससे उसकी तत्काल मौत हो गई. जिसने भी सुना उसके मुँह से बलात निकल पड़ा-'ईश्वर के न्याय से कोई बच नहीं सकता. वह बिना ऑखों के देखता है बिना कानों के सुनता है. उसके यहां देर हो सकती है लेकिन अंधेर नहीं.'

बॉध टूटेगा न ये मालूम था

करीब ४० गीतों का यह संग्रह अच्छा बन पड़ा है. शैलेश जी ने मैं तो बस बॉसुरी तम्हारी में लिखा है-

मन चाहे स्वर अपने, पाते हो तुम मुझसे,
जाने सच ये दुनिया सारी,
मैं तो बस बॉसुरी तुम्हारी।

टूट गये तो में लिखा है-

टूट गये तो फिर न जुड़ेगे,
संबधों के कोमल धागे
दो पग मैं भी आगे आऊँ,
दो पग तुम भी आओ आगे।।

रोयें या मुस्काये में लिखा है-

बहुरंगे चित्र बने, इस मन की भीत पर
प्रश्नचिहृन लगते है, पग-पग पर प्रीति पर
+++++++++++++++++++
हास अधर पर, अश्रु नयन में,
तन अपना, मन हुआ पराया।
प्रीति जुड़ गयी किस निर्मम से,
घड़ी-घड़ी जिसने तड़पाया।।

लेखकःडॉ.ब्रजेन्द्रनारायण द्विवेदी 'शैलेश'
मूल्यः३५/-रुपये मात्र
प्रकाशकःप्रकाशन केन्द्र, डालीगंज रेलवे क्रांसिग, सीतापुर रोड, लखनऊ

मेरी लोकप्रिय कवितायें

करीब ६७ रचनाओं का यह संग्रह अपने आप में कवि की अथक परिश्रम एवं रचनाओं के प्रति लगनशीलता को दर्शाता है. डॉ. वत्स के अन्य संग्रहों की भॉति यह संग्रह भी अनुकरणीय है.

तुम्हारा लख उर-सरसिज प्यार,
लिया मैंने रचना का भार।
++++++++++++++++++++++
किसने माया से क्षण में,
यह मंजुल विश्व बनायां
निज कुहुक विद्या जगति पर
है कौन धरा में छाया।
+++++++++++++++++++
माना भव-जल में नाव लगा,
तुमने जग का उद्धार किया।
पर मैंने सतगुरु चरणों से,
बतलाओ कितना प्यार किया?
++++++++++++++++++++++
आया बसंत ले अग-जग में,
नवजीवन का आभास सखे।
पल्लव प्रसून किसलय दल का,
ले मन्जुल मधुर विकास सखे।
++++++++++++++++++++++
ओ कवि उर-उपवन बतलाओ,
कैसा चिर पतझर आया है?
अब तक जो कोई मृदुल कुसूम,
तुमसे न कभी खिल पाया है?

रचनाकारःडॉ. बी.एल.वत्स'
मूल्यः६०/-रुपये मात्र
प्रकाशकःपुष्पगंध प्रकाशान, राजमहल चौक, कवर्धा, छत्तीसगढ़

भारतीय स्वतंत्रता

रचनाकार अनन्तराम गुप्त दोहा व चौपाईयों में माहिर है. इस विधा में उनका अच्छा प्रयास होता है. प्रस्तुत खण्ड काव्य आल्हा की तर्ज पर चौपाल पर गाया जा सकता है. इस खण्ड काव्य के मूल में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक न्याय दिलाना है. देखिए प्रथम सर्ग से-

विघ्न हरण मंगल करन, प्रणवों गणपति राज।
कृपा करों जन जानके, होवे पूरन काज।।
++++++++++++++++++++++
दो साल बाद फिर चढ़ आया, कन्नौज विजय अब कीन्हीं थी।
जयचन्द राय की आशा पर, कठिन कुल्हाड़ी दीन्हीं थी.
+++++++++++++++++++++
सब प्रकार से सजग हो, करते अपना काम।
इनकी उन्नति हेत मे, प्रगटें कार्य तमाम।।
पॉच वर्ष के कामों द्वारा, हुई तरक्की बहु भारी।
जिससे जनता के जीवन में, नई चेतना है धारी।।
हर क्षेत्र गॉव अरू नगरो में, नई नई सुविधा हुई प्यारी।
जहॉ स्वतंत्रता की चरचा, होती है नित नित भारी।।

रचनाकारःअनन्तराम गुप्त
मूल्यः५०/-रुपये मात्र
प्रकाशकःऋचा प्रकाशन, सावरकर वार्ड, कटनी, म.प्र.

पारदर्शी सतसई

पारदर्शी जी के सतसई में कबीर दास जी की झलक दिखाई पड़ती है, समाज को जागरुक करने ऐसी रचनांए वर्तमान बहुत कम ही देखने व पढ़ने को मिलती है. इस क्षेत्र में रचनाकार ने अच्छा प्रयास किया है-

रिश्तों में छोटे सभी, मॉ से बड़ा न कोय।
सत्य 'पारदर्शी' सुनो, मॉ बिन जन्म न होय।।
ज्ञान-दान दें गुरु सदा, हरते भव-भव पीर।
दर्श 'पारदर्शी' करो, बदल जाय तकदीर।।
जल्दी-जल्दी जो करे, बिन सोचे सब काम।
विफल 'पारदर्शी' हुए, मिले न शुभ परिणाम।।
आभूषण संस्कार का, पहना जिसनसे अंग।
प्रगति 'पारदर्शी' करे, बढ़ता नित्य अभंग।।
भजन करे भगवान के, होकर चिन्ता मुक्त।
मार्ग 'पारदर्शी' सरल, पहुँचे शिवपुर भक्त।।
तन-मन में अनबन रहे, जब जन धन का दास।
बुझे 'पारदर्शी' नहीं, बढ़ती धन की प्यास
फैशन में नेशन फॅसा, फैल रहा विज्ञान।
भूल 'पारदर्शी' गया, विश्व गुरु पहचान।।
खाना इतना खाइये, जितना पेट पचाय।
अधिक 'पारदर्शी' हमें, अस्पताल पहुँचाय।।
दो पत्थर इक खान के, कर्म-धर्म समझाय।
एक 'पारदर्शी' शिखर, एक नींव दब जाय।

रचनाकारःऊँ पारदर्शी
मूल्यः१००/-रुपये मात्र
प्रकाशकःपारदर्शी प्रिन्टर्स, २६१, ताम्बावती मार्ग, उदयपुर, राजस्थान

पुस्तक समीक्षा

काव्यधारा

यह ६४ रचकारों का काव्य संग्रह अर्चना प्रकाशन, श्रीराम कॉलोनी, वाटर वर्क्स के पास, भवानीमण्डी-३२६५०२, जिला-झालवाड़, राजस्थान से प्रकाशित हुआ है. इसके सम्पादक है राजेश कुमार शर्मा 'पुरोहित' इसका मूल्य १५०/- रुपये मात्र है.

+++++++++++++++++++++

सप्त सरोवर काव्य संकलन

यह १०५ रचनाकारों का संग्रह हरिगंगा प्रकाशन, गणपति काम्पलेक्स, सिविल लाईन्स, बिजनौर, से प्रकाशित हुआ है. इस संग्रह के संपादक है कई संकलनों के संपादन कर चुके, प्रख्यात साहित्यकार पं. डॉ० हितेश कुमार शर्मा. रंगीन आवरण से युक्त इस संग्रह का मूल्य २००/- रुपये मात्र है

+++++++++++++++++++++

श्रम साधना एवं साहित्य दर्पण

१७७ रचनाकारों के इस संकलन को न्यू ऋतंभरा साहित्य मंच, कुम्हारी जिला-दुर्ग, छत्तीसगढ़-४९००४२ से प्रकाशित किया गया है. इसके सम्पादक है महामहिम राज्यपाल एवं राष्ट्रपति पुरस्कृत शिक्षक एवं साहित्यकार आर. सी. मुदलियार. भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरु को समर्पित इस काव्य संग्रह की कीमत १५०/- रुपये मात्र है.

+++++++++++++++++++++

अभिव्यक्ति

१५२ रचनाकारों के इस अखिल भारतीय काव्य संकलन को प्रकाशित किया है अमन प्रकाशन, धामपुर ने तथा संपादन किया है. अनिल शर्मा 'अनिल' ८२, गुजरातियान, धामपुर, जिला-बिजनौर, उ.प्र. २४६७६१ ने. रंगीन आवरण युक्त इस संग्रह की कीमत २०० रुपये मात्र है.

पति की याद में छपवाया पति का ग़ज़ल संग्रह 'ग़ज़ल पारायण'

पति ही पत्नी की गति होता है. पति-पत्नी की रिश्ता अटूट और सात जन्मों का होता है. किसी भी स्त्री के लिए पति की मृत्यु सबसे दुःखदायक और पीड़ादायक घटना होती है. लेकिन ऐसा कम ही देखा गया है कि पति के मृत्यु के बाद किसी स्त्री ने अपने स्वर्गवासी पति का कविता संग्रह प्रकाशित किया है. ऐसा ही औरंगाबाद, के प्रमोद शिरढोणकर और आशागंगा शिरढोणकर नामक पति-पत्नी निःसंतान दंपति थे. प्रमोद 'बिरहमन' २००५ में सेवानिवृत हुए. कुछ दिनों बाद अचानक बीमार पड़ गये. इसी बीच १५ जुलाई २००६ को 'सूरज' कविता संग्रह छपकर आ गयी. तबियत बिगड़ती चली गयी. २१ फरवरी २००७ को रात में प्रमोद जी ने आशागंगा जी को बुलाया और कुछ कहना चाहा मगर मुँह से शब्द नहीं निकले. तुरन्त आशाजी ने पेन और कागज लाया उस पर उन्होंनें लिखा 'ग़ज़ल परायण' शायद वे अपनी आगामी पुस्तक का शीर्षक रखना चाहते थे.

पति के मृत्यु के पश्चात छह महीने के बाद अपने परम प्रिय पति स्व० प्रमोद शिरढोणकर की याद में आशागंगाजी ने उन्ही के द्वारा लिखा हुआ 'ग़ज़ल संग्रह' प्रकाशित किया 'ग़ज़ल परायण'. ५८ पृष्ठों की इस पुस्तक का मुखपृष्ठ स्वयं स्व० प्रमोद की तुलिका से निकाला गया है. पुस्तक की प्रकाशितका श्रीमती आशागंगा के मतानुसार 'मुख पृष्ठ पर अंकित दोनों महिला चित्र असर में मेरे व्यक्तिगत चित्र है.' इस संग्रह में कुल ५६ ग़ज़ले संकलित की गयी है. जिसका एक एक शेर लाख मोल की बात कहता है. 'परचम खड़े हो' नामक पहली ही ग़ज़ल काफी प्रभावशाली बन पड़ी है. वे इसमें कहते है-

हमारी जानिब है जिंदगी का ये मतलब, आदमी हो धूल, मगर परचम खड़े हो।

'कब्र की सही', जमीन तो अपनी होगी' नामक गजल पढ़कर तो ऐसा लगता है मानो उन्हें मृत्यु का आभास पहले ही हो गया था वे लिखते है-

'क्यों इस कदर है नाखुश सारा जहाँ, हद-ए-कब्र ही सही, जमीन तो अपनी होगी'

इस संग्रह के ग़ज़ल का एक एक मतला बहुत कुछ कहकर जाता है-

'अरे बिरहमन अब होश की दवा कर, तेरी ये बात न जाने कहाँ निकलें।

इस संग्रह की एक खास विशेषता यह है कि ग़ज़लों के साथ इसमें कुछ 'बिरहमनजी' की कविताएँ भी आशागंगाजी ने संकलित की है. 'कविता' नामक एक रचना में वे एक जगह कहते है-

क्या कहेगी बेटी अपने ससुराल में जाकर, माँ ने दी है दहेज में कविता।।

सारी ग़ज़लें और कवितॉए पाठकों को अन्त तक बांधे रखती है. वास्तव में अगर देखा जाए तो यह ग़ज़ल संग्रह पठनीय, रोचक बन पड़ा है. इस पुस्तक का मूल्य नहीं रखा गया है. आशागंगाजी ने अपने स्व० पति का यह खजाना निजी वितरण हेतु प्रकाशित करके अपने कवि पति को श्रद्धांजलि अर्पित की है. पुस्तक प्राप्ति हेतु श्रीमती आशा गंगा, 'आशास्थान', फ्लैट नं०६, दिशानभांगण बिल्डींग, बी केशवानंद नगर, एन-२, सिडको, औरंगाबाद-४३१२१०, महाराष्ट्र पर अथवा उनके फोन नं. ०२४० २४८०१२, ६३२५२३२११६ पर संपर्क किया जा सकता है.

समीक्षकः प्रो. सोनवणे राजेन्द्र 'अक्षत', संपादक लोकयज्ञ